लग्न: उगती राशि। दशा: ग्रहों से जुड़ी समय की अवधि। नक्षत्र: चंद्रमा के पथ का एक भाग।

नमूना रिपोर्ट · काल्पनिक व्यक्ति

आरव शर्मा की बृहत् कुंडली

सिंह लग्न की बड़ी कुंडली: संपूर्ण कुंडली की पूरी रीडिंग, फिर सभी सोलह वर्ग कुंडलियाँ, तीन दशा पद्धतियाँ, KP नक्षत्र और उप स्वामी, और आपके छत्तीसवें वर्ष का वर्षफल।

जन्म	स्थान	लग्न	राशि · नक्षत्र
15 अगस्त 1991, 06:40	Jaipur, Rajasthan, India	सिंह	तुला · चित्रा 3

इस रिपोर्ट में

01 एक नज़र में आपकी कुंडली

02 आपकी मुख्य भविष्यवाणियाँ

03 लग्न: शरीर, स्वभाव और मार्ग

04 चंद्र: मन और भावनाएँ

05 नौ ग्रह

06 बारह भाव

07 योग और दोष

08 प्रेम और विवाह

09 काम, धन और मकसद

10 आपके जीवन के अध्याय

11 आज का आकाश

12 आपके अगले 10 वर्ष

13 अगले 12 महीने

14 मुख्य मोड़

15 विवाह और रिश्तों का समय

16 करियर और धन का समय

17 सोलह वर्ग कुंडलियाँ

18 अष्टकवर्ग विस्तार से

19 विंशोत्तरी, योगिनी और चर दशा

20 KP: नक्षत्र और उप स्वामी

21 आपका आने वाला वर्ष (वर्षफल)

22 उपाय

23 यह रिपोर्ट कैसे बनी

✦ परिशिष्ट: आपकी गणनाएँ

01 एक नज़र में आपकी कुंडली

आरव, आपका जन्म 15 अगस्त 1991 को गुरुवार की सुबह, सूर्योदय के कुछ ही देर बाद जयपुर में हुआ, जब पूर्व क्षितिज पर सिंह राशि उदय हो रही थी। यह पहला अध्याय उन कुछ तथ्यों को एक साथ रखता है जिनसे आपकी पूरी कुंडली का स्वर तय होता है।

तीन स्तंभ

आपका लग्न सिंह है, 6°18′ पर, मघा नक्षत्र में। सिंह सूर्य की राजसी अग्नि राशि है, इसलिए पूरी कुंडली गरिमा, दृश्यता और दिल से नेतृत्व करने की इच्छा की दृष्टि से पढ़ी जाती है। मघा, सिंहासन और पितरों का नक्षत्र, इसे और गहरा करता है: परिवार, वंश और चीज़ों को सही ढंग से करने का भार आप गहराई से महसूस करते हैं।

आपकी चंद्र राशि तुला है और जन्म नक्षत्र चित्रा, तीसरा चरण। चित्रा का प्रतीक एक चमकता रत्न है और इसके देवता त्वष्टा हैं, दिव्य शिल्पकार। यह एक डिज़ाइनर का मन है: आप चाहते हैं कि चीज़ें, लोग और विचार सुंदरता से एक-दूसरे में बैठें, और केवल काम चल जाने से आप संतुष्ट नहीं होते।

आपका चंद्रमा वर्गोत्तम भी है, यानी जन्म कुंडली और नवांश दोनों में तुला में। शास्त्र वर्गोत्तम ग्रह को विशेष रूप से स्थिर और भरोसेमंद मानते हैं, और चंद्रमा के लिए इसका अर्थ है ऐसा भावनात्मक स्वभाव जो बाहर से दिखने से कहीं अधिक स्थिर है।

> ✦ सिंह लग्न · तुला राशि · चित्रा नक्षत्र, तीसरा चरण · पारंपरिक नामाक्षर रा

आपके जन्म का दिन

आपका जन्म पंचांग, यानी जन्म के क्षण के पाँच अंग, इस प्रकार हैं: गुरुवार, शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि, चित्रा नक्षत्र, शुभ योग और कौलव करण। बढ़ते चंद्रमा के पक्ष में गुरुवार का जन्म, और वह भी “शुभ” नाम के योग में, जीवन की एक कोमल और उत्साहवर्धक शुरुआत है; गुरुवार आपके जन्म दिन को गुरु से जोड़ता है।

सबसे ख़ास बातें

आपके लग्न में चार ग्रह एक साथ हैं: मंगल, बुध, गुरु और शुक्र, सभी सिंह राशि में। यह भरा हुआ, ऊर्जावान लग्न है। लोग आपको देखते हैं, और आपके अपने कर्म, वचन और निर्णय ही आपके जीवन का मुख्य इंजन हैं, भाग्य या दूसरे लोग नहीं।

मंगल आपके योगकारक हैं। सिंह लग्न के लिए मंगल चौथे भाव (केंद्र) और नौवें भाव (त्रिकोण) दोनों के स्वामी हैं, इसलिए ये कुंडली के सबसे मददगार ग्रह हैं।

कई शास्त्रीय योग बनते हैं: केंद्र में गुरु, मंगल और शुक्र के साथ होने से राज योग; धन भावों के स्वामी बुध के भाग्य भावों के स्वामियों के साथ होने से धन योग; और छठे भाव के स्वामी शनि के अपनी ही राशि में छठे भाव में होने से हर्ष योग। मिलकर ये ऐसे व्यक्ति का चित्र बनाते हैं जो मेहनत से ऊपर उठता है, कौशल से कमाता है और विरोध से आगे निकल जाता है।

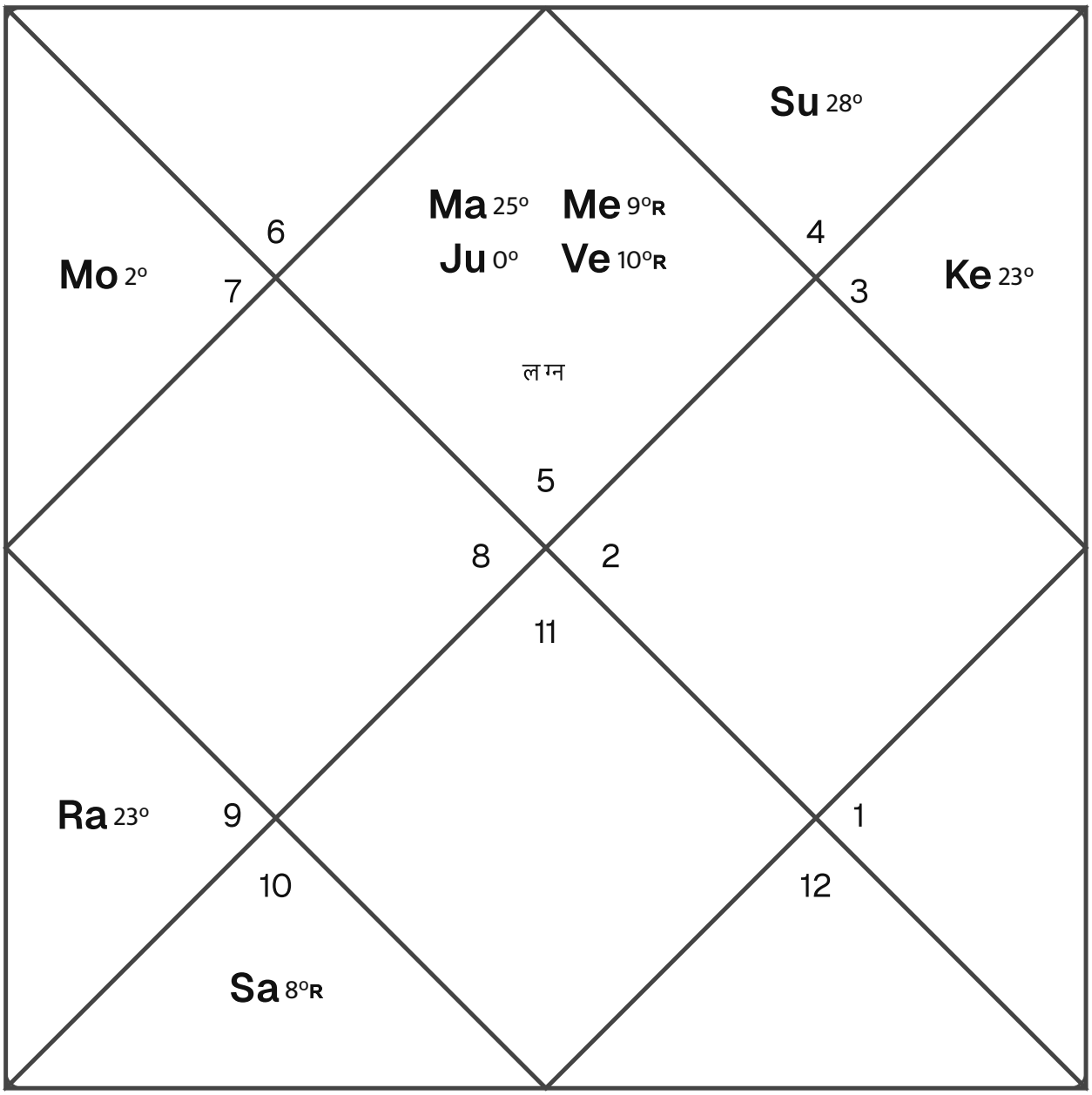

▶ कुंडली की तालिका देखें

आपकी गणना की गई कुंडलियाँ। दशमांश (D10) लग्न तुला है। इसकी कुंडली करियर अध्याय में है।

02 आपकी मुख्य भविष्यवाणियाँ

ये आपकी कुंडली में अगले दस वर्षों की सबसे महत्वपूर्ण अवधियाँ हैं, सबसे प्रबल पहले। हर एक बताती है कब, क्यों और संकेत कितना प्रबल है। ये योजना बनाने के लिए अवसर की अवधियाँ हैं, अटल फल नहीं; आगे के समय वाले अध्याय विस्तार देते हैं।

1. करियर में तरक्की और पहचान · प्रबल

कब: नवंबर 2026 से जनवरी 2027, और फिर नवंबर 2027 से फ़रवरी 2028। क्यों: दोनों अवधियों में गुरु और शनि का दोहरा गोचर आपके दसवें भाव पर पड़ता है; पहली में गुरु का गोचर सिंह, आपके लग्न, में भी है, और दूसरी शनि महादशा खोलती है। पदोन्नति, अधिक दिखने वाली भूमिका या सोच-समझकर नौकरी बदलने के लिए यह दशक की सबसे स्पष्ट अवधि है।

2. लगन और विवाह · प्रबल

कब: जून से अक्टूबर 2027, फिर फ़रवरी 2028 से जनवरी 2030, जिसका शिखर अगस्त से अक्टूबर 2029 और मई से सितंबर 2030 है। क्यों: आपके सातवें भाव के स्वामी शनि की अपनी महादशा और अंतर्दशा अगस्त 2027 से चलती है, और दोहरा गोचर आपके सातवें भाव और उसके स्वामी को छूता है। अविवाहित व्यक्ति के लिए यह दशक की मुख्य विवाह अवधि है; विवाहित के लिए साझा लगन के गहराने का समय।

3. आय और लाभ · प्रबल

कब: अगस्त 2030 से मई 2033 (शनि–बुध), जिसके शिखर अगस्त से अक्टूबर 2032 और मार्च 2033 से मार्च 2034 हैं। क्यों: बुध आपके आय और बचत वाले दूसरे और ग्यारहवें भाव के स्वामी हैं, और शिखर के महीनों में दोहरा गोचर आपके ग्यारहवें भाव पर पड़ता है। इन वर्षों में अपने कौशल और संपर्कों से कमाई लगातार बढ़ती है।

4. घर, संपत्ति या वाहन · मध्यम

कब: सितंबर 2030 से फ़रवरी 2031, और जून से अक्टूबर 2031। क्यों: दोहरा गोचर आपके घर और संपत्ति वाले चौथे भाव पर पड़ता है, जबकि गुरु का गोचर वृश्चिक, आपके चौथे भाव, में है। ख़रीदने, बनाने या घर बदलने की अच्छी अवधि, काग़ज़ ध्यान से जाँचकर।

5. संतान और रचनात्मक काम · मध्यम

कब: नवंबर 2026 से जनवरी 2027, अक्टूबर के अंत से नवंबर 2027, और अगस्त से अक्टूबर 2032। क्यों: गुरु और शनि का दोहरा गोचर आपके संतान, शिक्षा और सृजन वाले पाँचवें भाव पर पड़ता है। परिवार की योजना, किसी पाठ्यक्रम या रचनात्मक शुरुआत के लिए मददगार समय।

6. यात्रा और विदेश से जुड़ाव · मध्यम

कब: सितंबर 2030 से फ़रवरी 2031, और जुलाई 2034 से अप्रैल 2035। क्यों: दोहरा गोचर आपके विदेश वाले बारहवें भाव पर पड़ता है; जुलाई 2034 से अगस्त 2036 तक शनि का गोचर भी कर्क, आपके बारहवें भाव, में रहता है। लंबी यात्राएँ, विदेशी ग्राहकों के साथ काम या विदेश में लंबा प्रवास अनुकूल हैं।

7. अपनी गति संभालने की अवधि · हल्का

कब: अगस्त 2029 से मई 2032। क्यों: शनि का गोचर वृषभ में है, जो आपके चंद्रमा से आठवाँ है (ढैया), और जनवरी 2030 से जुलाई 2031 तक केतु का गोचर आपके दसवें भाव में है। अधिक काम और ज़िम्मेदारी की अपेक्षा रखें; नींद, व्यायाम और बचत की रक्षा करें। यह मेहनत से कुछ बनाने की अवधि है, हानि की अवधि नहीं।

> ✦ सबसे प्रबल वर्ष: करियर के लिए 2026 के अंत से 2028 की शुरुआत, साझेदारी के लिए 2028 से 2030, आय के लिए 2030 से 2034।

03 लग्न: शरीर, स्वभाव और मार्ग

लग्न कुंडली का सबसे निजी बिंदु है। यह आपके शरीर, स्वाभाविक स्वभाव और उस दिशा को बताता है जिसमें आपका जीवन स्वाभाविक रूप से चलता है।

सिंह लग्न

सिंह स्थिर अग्नि राशि है। यह गर्मजोशी, अच्छे काम पर गर्व, उदारता और निजी सम्मान की गहरी भावना देती है। सिंह लग्न के साथ आप स्वाभाविक रूप से ज़िम्मेदारी ले लेते हैं; कमरे में लोग आपकी ओर देखते हैं, तब भी जब आप ऐसा न चाहें। इसका छाया पक्ष है आलोचना के प्रति संवेदनशीलता और मदद माँगने में संकोच, क्योंकि माँगना मान खोने जैसा लग सकता है।

सिंह के आरंभिक अंश मघा में आते हैं, जिसके स्वामी केतु हैं और देवता पितर। आपकी पहचान इससे जुड़ी है कि आप कहाँ से आए हैं। बड़ों का सम्मान, परिवार की परंपराओं को जीवित रखना और कुछ ऐसा बनाना जो आपके बाद भी रहे, ये आपके लिए शौक नहीं, पूर्णता का हिस्सा हैं।

बारहवें भाव में लग्नेश

आपके लग्नेश सूर्य कर्क राशि में 27°59′ पर, आपके बारहवें भाव में, आश्लेषा नक्षत्र के चौथे चरण में हैं। बारहवाँ भाव, व्यय भाव, विदेश, निजी जीवन, नींद, आध्यात्मिक एकांत और खर्च का भाव है। जब लग्नेश यहाँ हों, तो व्यक्ति की जीवन ऊर्जा सुर्ख़ियों से दूर की जगहों और भीतरी अवस्थाओं की ओर बहती है।

व्यवहार में यह अक्सर यात्रा या विदेश से गहरे संबंध, पर्दे के पीछे ऐसा काम जो बाद में सामने आता है, और ऊर्जा लौटाने के लिए नियमित एकांत की ज़रूरत के रूप में दिखता है। सूर्य यहाँ मित्र राशि में हैं, इसलिए यह स्थिति सहज है, तनावपूर्ण नहीं। परंपरा की सलाह सरल है: अपने लिए शांत समय सुरक्षित रखें, और अपना मूल्य केवल सार्वजनिक पहचान से न मापें।

पहले भाव में चार ग्रह

मंगल, बुध, गुरु और शुक्र आपके साथ उदय होते हैं। मंगल जोश, साहस और तेज़ निर्णय देते हैं; बुध हाज़िरजवाबी और समझाने की कला; गुरु विवेक, आशावाद और सिखाने की प्रवृत्ति; शुक्र आकर्षण, रुचि और सुंदर परिवेश का प्रेम। यह समृद्ध मिश्रण है, और किस क्षण किस आवाज़ को सुनना है, यह सीखना आपके जीवन का एक शांत कौशल है।

इन चारों में से बुध और गुरु सूर्य के बहुत पास हैं और अस्त माने जाते हैं। अस्त होने का पारंपरिक अर्थ है कि ग्रह का फल स्वतंत्र रूप से नहीं, आपके अपने अधिकार और पहचान के माध्यम से आता है; इसलिए आपकी बुद्धि और आपके सिद्धांत तब सबसे अच्छे दिखते हैं जब परियोजना की बागडोर आपके हाथ में हो। बुध और शुक्र वक्री भी हैं, जो सोच-विचार का गुण है: आप विचारों और संबंधों पर लौटकर उन्हें निखारते हैं।

> ✦ आपके लग्न में मंगल, बुध, गुरु और शुक्र हैं: कर्म, वाणी, विवेक और सौम्यता, सब आपसे शुरू होते हैं।

नवांश लग्न

नवांश (D9) में, जो भीतरी बल और विवाह की कुंडली है, आपका लग्न वृषभ है। सिंह के अग्निमय, दिखने वाले बाहरी रूप के नीचे एक स्थिर, धैर्यवान और सुख-प्रिय भीतरी स्वभाव है जो सुरक्षा और निष्ठा को महत्व देता है। बहुत-से लोग पहले सिंह से मिलते हैं और बाद में हैरान होते हैं कि भीतर से आप कितने ज़मीन से जुड़े और भरोसेमंद हैं।

04 चंद्र: मन और भावनाएँ

ज्योतिष में चंद्रमा मन है। इसकी राशि, भाव और नक्षत्र बताते हैं कि आप कैसे महसूस करते हैं, आपको क्या सुकून देता है और दबाव में आप कैसी प्रतिक्रिया देते हैं।

तीसरे भाव में तुला का चंद्रमा

आपके चंद्रमा तुला राशि में 2°47′ पर, आपके तीसरे भाव, सहज भाव, में हैं। तुला संतुलन, न्याय और संबंधों की राशि है। भावनात्मक रूप से आपको अपने आसपास सामंजस्य चाहिए, और झगड़ा या रूखापन आपको उतना प्रभावित करता है जितना आप आमतौर पर दिखने नहीं देते।

तीसरा भाव साहस, भाई-बहन, संवाद और हाथ व वाणी के कौशल का भाव है। यहाँ चंद्रमा एक चंचल, जिज्ञासु मन देते हैं जो बनाते, लिखते, बोलते या छोटी यात्राएँ करते समय सबसे ख़ुश रहता है। आपका मूड इससे गहराई से जुड़ा है कि आप कुछ रच रहे हैं या नहीं। जब मन उदास हो, तो पारंपरिक उपाय ही व्यावहारिक उपाय है: कोई शिल्प, कोई बातचीत या कोई छोटी यात्रा।

चित्रा, चमकता रत्न

आपके चंद्रमा चित्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में हैं। चित्रा के स्वामी मंगल हैं और देवता त्वष्टा, वह दिव्य कारीगर जिन्होंने देवताओं के अस्त्र और आभूषण गढ़े। चित्रा में जन्मे लोगों की आँख रूप, रंग और संरचना को ख़ूब पहचानती है, और कच्चे माल से कुछ पूर्ण और सराहनीय बनाते समय वे सबसे जीवंत महसूस करते हैं।

क्योंकि चित्रा के स्वामी मंगल हैं, और मंगल आपके लग्न में योगकारक हैं, आपकी भावनाएँ और आपका जोश गहराई से जुड़े हैं। जब दिल किसी काम में लगा हो, ऊर्जा अपने आप आती है; जब नहीं, तो छोटे काम भी भारी लगते हैं। इसलिए ऐसा काम चुनना जिसकी आपको सच में परवाह हो, आपके लिए विलासिता नहीं, मन को स्वस्थ रखने का तरीका है।

> ✦ चित्रा तीसरा चरण: नाम का पारंपरिक पहला अक्षर रा है।

भावनात्मक स्थिरता

आपका चंद्रमा वर्गोत्तम है, जिसे शास्त्र मन की स्थिरता और विश्वसनीयता के रूप में पढ़ते हैं। केमद्रुम योग भी बनता है, यानी चंद्रमा से दूसरी या बारहवीं राशि में कोई ग्रह नहीं है। अपने आप में यह कभी-कभी अकेलेपन के भाव को बताता है, पर यहाँ यह भंग है: कई ग्रह आपके लग्न से केंद्र में हैं, और शनि चंद्रमा से केंद्र में हैं। पारंपरिक पाठ यही है कि यह कठिनाई लागू नहीं होती।

जीवन की सीख फिर भी जानने लायक है। आप बहुत कुछ अकेले उठा सकते हैं, और आपको ऐसा करना नहीं चाहिए। दो-तीन ऐसे लोग रखें जिनसे आप खुलकर बात कर सकें; मन साफ़ रहेगा।

05 नौ ग्रह

हर ग्रह का अपना मकसद है। यहाँ बताया गया है कि आपका हर ग्रह कहाँ बैठा है, किन भावों का स्वामी है और आपके जीवन में कैसे व्यक्त होने की संभावना है।

सूर्य

सूर्य कर्क राशि में 27°59′ पर आपके बारहवें भाव में, आश्लेषा के चौथे चरण में, मित्र राशि में हैं। लग्नेश होने के कारण ये आपका ही प्रतिनिधित्व करते हैं: आपकी जीवन शक्ति, आत्मविश्वास और मकसद। बारहवें भाव से सूर्य सार्वजनिक प्रतिस्पर्धा के बजाय सेवा, अध्ययन, विदेशी संबंधों और आध्यात्मिक साधना के माध्यम से सबसे अच्छा फल देते हैं। नवांश में सूर्य मीन में जाते हैं, करुणा और भीतरी दृष्टि की राशि, जो इसी बात को पुष्ट करती है: आपका अधिकार तब बढ़ता है जब वह स्वयं से बड़े किसी मकसद की सेवा करे।

चंद्र

चंद्रमा तुला राशि में 2°47′ पर आपके तीसरे भाव में हैं और बारहवें भाव के स्वामी हैं। ये वर्गोत्तम हैं, जिससे मन स्थिर और भरोसेमंद रहता है। चंद्रमा के बारहवें भाव के स्वामी होने और लग्नेश के भी बारहवें भाव में होने से विश्राम, स्वप्न, यात्रा और निजी सोच-विचार आपके भावनात्मक जीवन से गहराई से बुने हुए हैं। अच्छी नींद आपका सबसे महत्वपूर्ण सहारा है।

मंगल

मंगल सिंह राशि में 25°16′ पर आपके पहले भाव में, पूर्वा फाल्गुनी के चौथे चरण में, मित्र राशि में हैं। ये चौथे भाव (घर, संपत्ति, मन की शांति) और नौवें भाव (भाग्य, पिता, गुरुजन, आस्था) के स्वामी हैं, इसलिए योगकारक हैं। लग्न में योगकारक होने से आपकी अपनी पहल ही भाग्य, संपत्ति और गुरुजनों के साथ का द्वार खोलती है। नवांश में मंगल अपनी ही राशि वृश्चिक में हैं, जो इन्हें और बल देता है।

लग्न से मंगल का पहले भाव में होना मांगलिक दोष भी बनाता है। इस पर योग और दोष वाले अध्याय में ठीक से बात की गई है; अभी इतना जानना काफ़ी है कि जो ऊर्जा आपको निर्णायक बनाती है वही अधीर भी बना सकती है, और उसे खेल या शारीरिक काम में लगाना पारंपरिक और बहुत प्रभावी उपाय है।

बुध

बुध सिंह राशि में 9°57′ पर आपके पहले भाव में, मघा के तीसरे चरण में हैं। ये वक्री और अस्त हैं, मित्र राशि में हैं, और दूसरे भाव (वाणी, परिवार, बचत) तथा ग्यारहवें भाव (आय, लाभ, संपर्क) के स्वामी हैं। आपके धन भावों के स्वामी आपके ही लग्न में बैठे हैं, इसलिए आपकी कमाई सीधे आपके कौशल, संवाद और प्रतिष्ठा पर निर्भर है।

वक्री बुध दोबारा सोचते हैं: आप सुधारते हैं, फिर से विचारते हैं, और अक्सर दूसरी बार बेहतर उत्तर पर पहुँचते हैं। अस्त बुध तब सबसे अच्छा काम करते हैं जब विचारों पर आपका नाम हो। नवांश में बुध अपनी ही राशि मिथुन में हैं, इसलिए भीतरी बुद्धि बलवान है, भले ही उसे दिखने में समय लगे।

गुरु

गुरु सिंह राशि में 0°08′ पर आपके पहले भाव में, मघा के पहले चरण में, अस्त और मित्र राशि में हैं। ये पाँचवें भाव (संतान, सृजन, विद्या, पूर्व पुण्य) और आठवें भाव (परिवर्तन, शोध, गुप्त विषय) के स्वामी हैं। लग्न में गुरु कुंडली के क्लासिक आशीर्वादों में से एक है: यह विवेक, रक्षक आशावाद और सलाहकार या शिक्षक की स्वाभाविक भूमिका देता है।

गुरु आपकी वर्तमान महादशा के स्वामी भी हैं, जो अगस्त 2011 से अगस्त 2027 तक चलती है, इसलिए सीखने, बढ़ने और मार्गदर्शन के इनके विषयों ने अब तक आपके पूरे वयस्क जीवन को आकार दिया है। नवांश में गुरु मेष में हैं, एक अग्नि राशि, जो इनकी ऊर्जा को सक्रिय और आगे बढ़ती रखती है।

> ✦ आपके लग्न में गुरु पाँचवें और आठवें भाव के स्वामी हैं: विवेक, सृजन और स्वयं को नया बनाने की क्षमता।

शुक्र

शुक्र सिंह राशि में 10°01′ पर आपके पहले भाव में, मघा के चौथे चरण में हैं। ये वक्री हैं और स्वाभाविक शत्रु सूर्य की राशि में हैं, तथा तीसरे भाव (साहस, कौशल, भाई-बहन) और दसवें भाव (करियर और पद) के स्वामी हैं। आपके करियर के स्वामी आपके लग्न में बैठे हैं, जो इस बात का प्रबल संकेत है कि आपका बिज़नेस आपके स्वभाव, रुचि और उपस्थिति से गहराई से जुड़ा है।

कठिन राशि में शुक्र आपको सुंदरता और न्याय के मामले में माँग करने वाला बना सकते हैं, कभी-कभी झुँझलाहट तक। वक्री शुक्र संबंधों और रचनात्मक काम पर तब तक लौटते हैं जब तक वे सही न लगें। नवांश में शुक्र कर्क में हैं, एक देखभाल करने वाली जल राशि, जो इन्हें नरम करती है।

शनि

शनि मकर राशि में 8°23′ पर आपके छठे भाव में, उत्तराषाढ़ा के चौथे चरण में हैं। ये अपनी ही राशि में हैं और वक्री हैं, तथा छठे भाव (काम, सेहत की दिनचर्या, प्रतिस्पर्धा) और सातवें भाव (विवाह और साझेदारी) के स्वामी हैं। छठे भाव में अपनी राशि के शनि इनकी सबसे अच्छी स्थितियों में से एक है: यह सहनशक्ति, दैनिक काम में नियम से काम और किसी भी प्रतियोगी से आगे टिके रहने की क्षमता देता है। यही आपका हर्ष योग है।

क्योंकि शनि सातवें भाव के भी स्वामी हैं, आपके जीवन में साझेदारी काम, कर्तव्य और परिपक्वता से जुड़ी है। धीरे-धीरे बढ़ने वाले और साझा मेहनत पर बने संबंध आपको तूफ़ानी रोमांस से कहीं ज़्यादा रास आते हैं। शनि की महादशा अगस्त 2027 में शुरू होती है, इसलिए ये गुण अगले उन्नीस वर्षों में केंद्र में होंगे।

राहु और केतु

राहु धनु राशि में 23°25′ पर आपके पाँचवें भाव में, पूर्वाषाढ़ा के चौथे चरण में हैं, और केतु ठीक सामने मिथुन में 23°25′ पर आपके ग्यारहवें भाव में, पुनर्वसु के दूसरे चरण में हैं। पाँचवें भाव में राहु अनोखी विद्या, रचनात्मक प्रयोगों और दूसरी संस्कृतियों के विचारों की भूख लाते हैं, और कभी-कभी सट्टे जैसे जोखिमों के प्रति बेचैनी भी। ग्यारहवें भाव में केतु भीड़, पद और बड़े नेटवर्क के प्रति एक तटस्थ दृष्टि देते हैं: आप बहुत-से परिचितों के बजाय कुछ सच्ची दोस्तियों को महत्व देते हैं।

मिलकर ये बताते हैं कि आपका विकास रचनात्मक बात रखने की कला और मौलिक सोच में है (पाँचवें भाव में राहु), जबकि समूहों के भीतर काम करना आप लगभग स्वाभाविक रूप से पहले से जानते हैं (ग्यारहवें भाव में केतु)।

06 बारह भाव

हर भाव जीवन का एक विभाग है। हर भाव के लिए हम उसकी राशि, उसके स्वामी की स्थिति, उसमें बैठे ग्रह और उसका सर्वाष्टकवर्ग अंक देते हैं। 28 या अधिक पारंपरिक रूप से बलवान है, और 25 से कम अंक अधिक सचेत ध्यान माँगते हैं। आपका कुल 337 है, जो शास्त्रीय रूप से निश्चित कुल है।

पहले से चौथे भाव तक

पहला भाव, तनु (सिंह, अंक 30)। स्वामी सूर्य बारहवें भाव में; इसमें मंगल, बुध, गुरु और शुक्र हैं। एक बलवान, व्यस्त भाव: सेहत, आत्मविश्वास और निजी प्रयास आपकी नींव हैं।

दूसरा भाव, धन (कन्या, अंक 21)। इसके स्वामी बुध पहले भाव में हैं। कम अंक बचत और घर में तीखे शब्दों के प्रति सावधानी माँगता है; स्वामी लग्न में होने से कमाई अच्छी है, पर धन टिकाने के लिए स्वचालित बचत जैसी सोची-समझी आदत चाहिए।

तीसरा भाव, सहज (तुला, अंक 26)। इसके स्वामी शुक्र पहले भाव में हैं; इसमें चंद्रमा हैं। साहस, सृजन और संवाद आपके लिए भावनात्मक रूप से महत्वपूर्ण हैं, और भाई-बहन या क़रीबी सहकर्मी आपकी कहानी में सच्ची भूमिका निभाते हैं।

चौथा भाव, सुख (वृश्चिक, अंक 27)। इसके स्वामी योगकारक मंगल पहले भाव में हैं। घर और संपत्ति आपकी अपनी पहल से आते हैं; आप विरासत में पाने के बजाय अपना घर स्वयं बनाने या ख़रीदने की अधिक संभावना रखते हैं।

पाँचवें से आठवें भाव तक

पाँचवाँ भाव, पुत्र (धनु, अंक 27)। इसके स्वामी गुरु पहले भाव में हैं; इसमें राहु हैं। सृजन, पढ़ाई और संतान आपकी अपनी पहचान से गहराई से जुड़े हैं। राहु मौलिकता और अपरंपरागत विषयों में रुचि जोड़ते हैं; साथ ही जुए जैसे जोखिमों से सावधानी भी माँगते हैं।

छठा भाव, रिपु (मकर, अंक 32)। इसके स्वामी शनि अपनी ही राशि में इसी भाव में हैं। आपके सबसे बलवान भावों में से एक: काम, सेवा और बाधाओं पर विजय की उत्कृष्ट क्षमता। दिनचर्या आपकी साथी है।

सातवाँ भाव, कलत्र (कुंभ, अंक 19)। इसके स्वामी शनि छठे भाव में हैं। आपकी कुंडली का सबसे कम अंक, जो धैर्य माँगने वाले भाव के लिए आम है। साझेदारी समय, साझा काम और यथार्थवादी अपेक्षाओं के साथ बेहतर होती है, जैसा प्रेम वाला अध्याय बताता है।

आठवाँ भाव, आयु (मीन, अंक 27)। इसके स्वामी गुरु पहले भाव में हैं। एक संतुलित भाव, जो शोध, दृढ़ता और परिवर्तन के साथ स्वस्थ संबंध को सहारा देता है।

नौवें से बारहवें भाव तक

नौवाँ भाव, धर्म (मेष, अंक 28)। इसके स्वामी योगकारक मंगल पहले भाव में हैं। भाग्य कर्म के पीछे चलता है; गुरुजन, आपके पिता और आपके अपने सिद्धांत बड़े सहारे हैं।

दसवाँ भाव, कर्म (वृषभ, अंक 37)। इसके स्वामी शुक्र पहले भाव में हैं। बहुत बलवान करियर भाव। पारंपरिक रूप से ऐसा काम संकेतित है जिसमें आपकी रुचि, उपस्थिति और संबंध मायने रखें, और पहचान लगातार बढ़ती है।

ग्यारहवाँ भाव, लाभ (मिथुन, अंक 41)। इसके स्वामी बुध पहले भाव में हैं; इसमें केतु हैं। आपका सबसे ऊँचा अंक: लाभ, आय और इच्छाओं की पूर्ति को प्रबल सहारा है, विशेषकर आपके अपने कौशल और कुछ सच्चे संपर्कों के माध्यम से।

बारहवाँ भाव, व्यय (कर्क, अंक 22)। इसके स्वामी चंद्रमा तीसरे भाव में हैं; इसमें सूर्य हैं। खर्च और घर से दूर बिताए समय पर ध्यान चाहिए, और विश्राम अनमोल है। विदेशी संबंध और आध्यात्मिक साधना यहाँ अर्थपूर्ण हैं।

> ✦ आपके सबसे बलवान भाव: ग्यारहवाँ (41), दसवाँ (37) और छठा (32)। लाभ, करियर और दैनिक काम में कुंडली आपको आगे बढ़ाती है।

भाव अनुसार सर्वाष्टकवर्ग

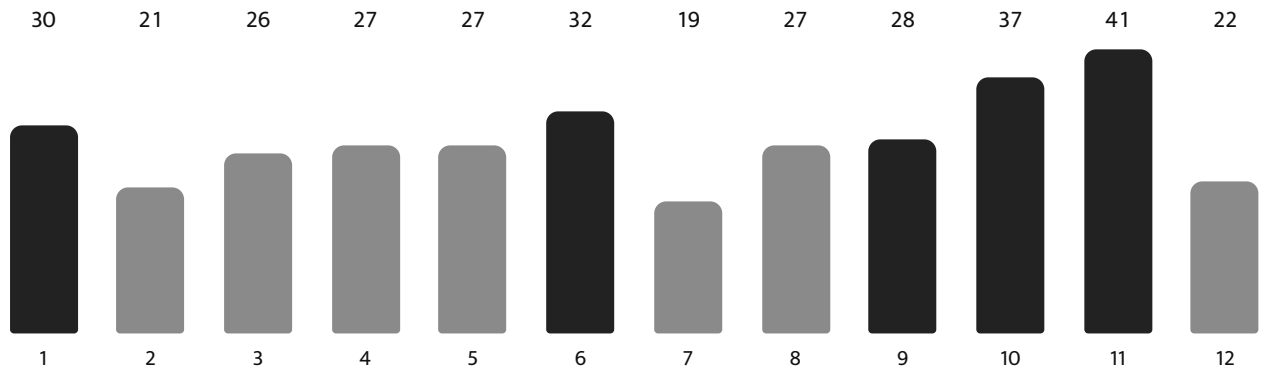

हर भाव के बिंदु (कुल 337)। 28 या अधिक पारंपरिक रूप से बलवान; 25 से कम में सावधानी।

07 योग और दोष

योग ग्रहों के शास्त्रीय संयोग हैं; दोष वे संयोग हैं जो सावधानी माँगते हैं। यहाँ हर वह योग है जो iAstroGuru Engine ने आपकी कुंडली में पाया, उसके पारंपरिक अर्थ के साथ।

योगकारक मंगल

सिंह लग्न के लिए मंगल चौथे और नौवें भाव के स्वामी हैं, यानी केंद्र और त्रिकोण दोनों के, जो इन्हें योगकारक बनाता है। आपके ही लग्न में होने से ये साहस, पहल और आपके प्रयास व भाग्य के बीच सीधा संबंध देते हैं। जिन वर्षों और परियोजनाओं में आप साहस और शारीरिक ऊर्जा से काम करते हैं, वे अक्सर सबसे भाग्यशाली होते हैं।

राज योग

गुरु (पाँचवें भाव, त्रिकोण, के स्वामी), मंगल (चौथे और नौवें के स्वामी) और शुक्र (दसवें भाव, केंद्र, के स्वामी) आपके पहले भाव में एक साथ हैं। केंद्र और त्रिकोण के स्वामियों का मिलन क्लासिक राज योग है, जो पारंपरिक रूप से बढ़ते पद, सम्मान और नेतृत्व से जुड़ा है। लग्न में ही बनने के कारण यह आपके स्वभाव और निर्णयों के माध्यम से काम करता है।

धन योग

आपके धन भावों, दूसरे और ग्यारहवें, के स्वामी बुध, भाग्य भावों पाँचवें और नौवें के स्वामी गुरु और मंगल के साथ हैं। यह धन योग है, जो पारंपरिक रूप से कमाने और साधन बनाने की क्षमता से जुड़ा है। ग्यारहवें भाव के 41 अंकों के साथ लाभ की संभावना स्पष्ट है; दूसरे भाव का कम अंक सोच-समझकर बचत करने की याद दिलाता है।

हर्ष योग

छठे भाव के स्वामी शनि अपनी ही राशि में छठे भाव में हैं। यह हर्ष योग है, तीन विपरीत राज योगों में से एक, जो पारंपरिक रूप से अच्छे सेहत, निर्भयता और विरोधियों पर विजय से जुड़ा है। यह उस व्यक्ति की कुंडली है जो माँग वाले, प्रतिस्पर्धी माहौल में अच्छा करता है।

केमद्रुम योग, भंग

आपके चंद्रमा से दूसरी या बारहवीं राशि में कोई ग्रह नहीं है, जिससे तकनीकी रूप से केमद्रुम योग बनता है। यह भंग है क्योंकि ग्रह आपके लग्न से केंद्र में हैं, और शनि चंद्रमा से केंद्र में हैं। इस तरह भंग होने पर शास्त्र इसके प्रभाव नहीं मानते।

मांगलिक दोष

लग्न से गिनने पर मंगल आपके पहले भाव में हैं, जिससे लग्न से मांगलिक दोष बनता है। चंद्रमा से गिनने पर मंगल ग्यारहवें भाव में हैं, जहाँ दोष नहीं है। अधिकांश परंपराओं में केवल एक आधार से बना दोष हल्का माना जाता है।

मांगलिक दोष बहुत आम है और यह मिलान का विचार है, किसी व्यक्ति पर निर्णय नहीं। पारंपरिक रूप से जब दोनों साथी मांगलिक हों तो यह संतुलित हो जाता है, और कई अन्य स्थितियाँ इसे भंग कर सकती हैं। समय आने पर केवल नाम पर भरोसा करने के बजाय दोनों कुंडलियों का ठीक से मिलान करें।

काल सर्प

आपकी कुंडली में काल सर्प नहीं बनता: ग्रह राहु–केतु अक्ष के दोनों ओर हैं।

ग्यारहों दोषों की जाँच

ग्यारह दोष जाँचों में मंगल दोष केवल लग्न से, हल्के रूप में है, और केमद्रुम भंग है। काल सर्प, पितृ, ग्रहण, गुरु चांडाल, शापित, अंगारक, विष और गंडमूल दोष नहीं हैं, और अभी साढ़े साती या ढैया नहीं चल रही।

08 प्रेम और विवाह

संबंध सातवें भाव और उसके स्वामी से, शुक्र से, और नवांश से पढ़े जाते हैं, जिसे पराशर ने विवाह के लिए समर्पित किया है।

सातवाँ भाव

आपका सातवाँ भाव कुंभ है, मित्रता, स्वतंत्रता और साझा आदर्शों की वायु राशि। आप ऐसे साथी की ओर आकर्षित होते हैं जो बुद्धिमान हो, थोड़ा अलग हो और सच्चा मित्र भी हो, जिसका अपना जीवन और अपनी राय हो। इसके स्वामी शनि अपनी राशि में आपके छठे भाव में हैं।

जब सप्तमेश काम और सेवा के भाव में हों, तो साझेदारी साझा प्रयास और दैनिक दिनचर्या से जुड़ जाती है। आपके जीवन में संबंध साथ मिलकर कुछ करने से गहरे होते हैं: घर, बिज़नेस या परिवार की दिनचर्या बनाना। शनि का प्रभाव धैर्य की सलाह भी देता है; जीवन स्थिर लगने के बाद किए गए वादे इस स्थिति के लिए पारंपरिक रूप से अधिक टिकाऊ होते हैं।

शुक्र और नवांश

प्रेम के कारक शुक्र आपके लग्न में वक्री हैं: आप प्रेम में सुंदरता, निष्ठा और न्याय की गहरी परवाह करते हैं, और महत्वपूर्ण संबंधों को आसानी से जाने देने के बजाय उन पर लौटते हैं। नवांश में शुक्र कर्क में हैं, एक पोषण करने वाली राशि, और आपका नवांश लग्न वृषभ है, जिसके स्वामी स्वयं शुक्र हैं। सिंह के अभिमान के नीचे एक ऐसा साथी है जो सुरक्षा, स्नेह और आरामदायक घर चाहता है।

नवांश में मंगल अपनी राशि वृश्चिक में राहु के साथ हैं। निकट संबंधों में जुनून और तीव्रता प्रबल है; शुरुआत में ही अपेक्षाओं पर ईमानदार बातचीत पारंपरिक सुरक्षा है।

> ✦ सातवाँ भाव कुंभ, स्वामी शनि अपनी राशि में छठे भाव में: साझा काम और समय से बढ़ने वाला प्रेम।

क्या मददगार है

आपका तुला का चंद्रमा न्याय और कोमलता चाहता है, और सिंह लग्न सराहना चाहता है। व्यवहार में संबंध तब सबसे अच्छे चलते हैं जब आप यह उम्मीद करने के बजाय कि साथी स्वयं समझ जाए, साफ़ कहें कि आपको क्या चाहिए, और जब आप दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए जगह रखें, जो सातवें भाव का कुंभ माँगता है। साथ मिलकर छोटे, नियमित अनुष्ठान, जैसे साझा सैर, भोजन या साप्ताहिक योजना, बड़े दिखावे से ज़्यादा सप्तमेश शनि को रास आते हैं।

09 काम, धन और मकसद

करियर दसवें भाव और उसके स्वामी से, दशमांश (D10) से, और धन भावों दूसरे व ग्यारहवें से पढ़ा जाता है।

दसवाँ भाव

आपका दसवाँ भाव वृषभ है, 37 सर्वाष्टकवर्ग अंकों के साथ, आपकी कुंडली का दूसरा सबसे ऊँचा अंक। वृषभ मूल्य, सुंदरता, स्थिरता और साधनों की राशि है। इसके स्वामी शुक्र आपके लग्न में हैं, जो आपके बिज़नेस को सीधे आपके स्वभाव और रुचि से जोड़ता है।

पारंपरिक रूप से यह ऐसे काम की ओर संकेत करता है जहाँ प्रस्तुति, डिज़ाइन, संबंध, वित्त, आतिथ्य, कला या विलासिता मायने रखे, या कोई भी क्षेत्र जहाँ आपकी निजी उपस्थिति और निर्णय ही उत्पाद हों। स्वामी वक्री होने से ऐसे करियर विशेष रूप से अनुकूल हैं जिनमें किसी चीज़ को निखारना, पुनर्स्थापित करना या नया रूप देना हो।

दशमांश (D10)

आपकी दशमांश कुंडली, जो करियर की वर्ग कुंडली है, में लग्न तुला है और चंद्रमा उसी में हैं। लोगों से जुड़ा काम, बातचीत और कूटनीति व संतुलन वाला हर काम उभरता है। दशमांश के सातवें भाव में मंगल अपनी राशि मेष में हैं, जो साझेदारी, ग्राहकों और सौदे करने को सहारा देता है। दशमांश के ग्यारहवें भाव में गुरु सिंह में हैं, जो आपके बिज़नेस से जुड़े नेटवर्क से लाभ और पहचान का क्लासिक समर्थन है।

धन

बुध आपके दूसरे और ग्यारहवें दोनों भावों के स्वामी हैं और गुरु व मंगल के साथ आपके लग्न में बैठकर पहले बताया गया धन योग बनाते हैं। सर्वाष्टकवर्ग में ग्यारहवें भाव के 41 अंक हैं, आपके सबसे ऊँचे, जबकि दूसरे भाव के 21। व्यावहारिक पाठ स्पष्ट है: आप अपने कौशल से अच्छा कमाने की संभावना रखते हैं, पर बचत सोच-समझकर करनी होगी। अच्छे इरादों की तुलना में लंबी अवधि की बचत में स्वचालित हस्तांतरण इस कुंडली के लिए कहीं बेहतर है।

मकसद

छठे भाव में बलवान शनि और बारहवें में सूर्य के साथ, आपकी सबसे गहरी संतुष्टि उपयोगी और अच्छे से किए गए काम से आती है, जिसमें अक्सर सेवा या पर्दे के पीछे का तत्व होता है, और ऐसे योगदान से जो टिके। सिंह के लिए पद मायने रखता है, पर इस कुंडली में अर्थ उससे भी अधिक।

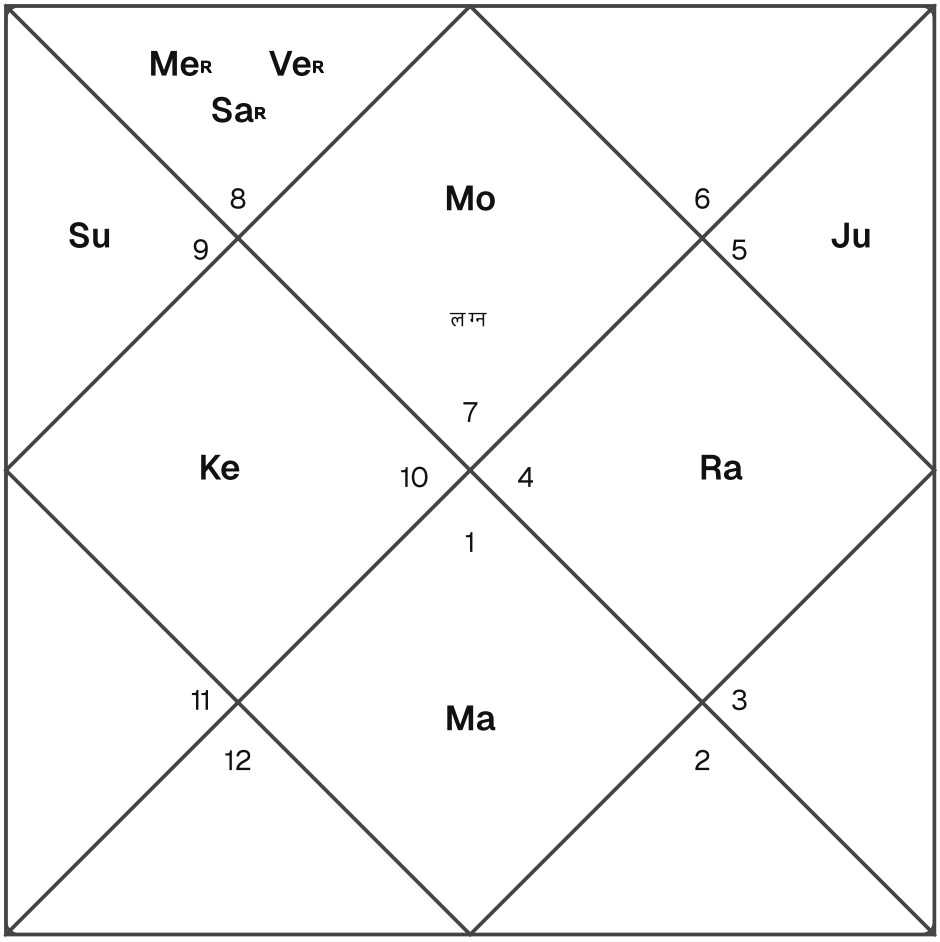

▶ कुंडली की तालिका देखें

दशमांश (D10), करियर और पद की वर्ग कुंडली।

10 आपके जीवन के अध्याय

विंशोत्तरी दशा जीवन को बारी-बारी से हर ग्रह द्वारा शासित अवधियों में बाँटती है, जो आपके जन्म नक्षत्र के स्वामी से शुरू होती हैं। आपका जन्म चित्रा में हुआ, जिसके स्वामी मंगल हैं, इसलिए जीवन मंगल की एक छोटी दशा से शुरू हुआ।

अभी आप कहाँ हैं

आप गुरु महादशा के अंतिम भाग में हैं, जो 26 अगस्त 2011 से 26 अगस्त 2027 तक है। गुरु आपके लग्न में हैं और पाँचवें व आठवें भाव के स्वामी हैं, इसलिए ये सोलह वर्ष सीखने, बढ़ने, सृजन और बड़े निजी परिवर्तन के रहे हैं।

इसके भीतर अभी राहु की अंतर्दशा चल रही है, 1 अप्रैल 2025 से 26 अगस्त 2027 तक। राहु आपके पाँचवें भाव में हैं, इसलिए यह अंतिम उप-अवधि पढ़ाई, रचनात्मक काम या नए उपक्रमों में असामान्य अवसर लाती है, साथ ही कुछ अलग करने की बेचैन इच्छा भी। यह प्रयोग करने का अच्छा समय है, और बड़े सट्टेबाज़ी वाले दाँव के लिए कम अच्छा।

गुरु के वर्ष, पीछे मुड़कर

अध्याय की शुरुआत गुरु की अपनी अंतर्दशा से हुई (अगस्त 2011 से अक्टूबर 2013), फिर शनि (अप्रैल 2016 तक), बुध (अगस्त 2018 तक), केतु (जुलाई 2019 तक), शुक्र (मार्च 2022 तक), सूर्य (दिसंबर 2022 तक), चंद्र (अप्रैल 2024 तक) और मंगल (अप्रैल 2025 तक)। पीछे देखें तो 2019 से 2022 के शुक्र के वर्ष, जब दसवें भाव के स्वामी आपके लग्न में सक्रिय थे, करियर और संबंधों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहे होंगे।

शनि महादशा, 2027 से 2046

26 अगस्त 2027 को आप शनि की महादशा में प्रवेश करते हैं, उन्नीस वर्ष शनि के शासन में। शनि अपनी राशि में आपके छठे भाव में हैं, छठे और सातवें के स्वामी हैं और हर्ष योग बनाते हैं। यह काम, सेवा, सेहत के नियम से काम और दीर्घकालिक साझेदारी के लिए एक बलवान, उत्पादक दशा है। फल धीरे-धीरे आते हैं, और टिकते हैं।

इसकी अंतर्दशाएँ हैं: शनि (अगस्त 2027 से अगस्त 2030), बुध (मई 2033 तक), केतु (जून 2034 तक), शुक्र (अगस्त 2037 तक), सूर्य (जुलाई 2038 तक), चंद्र (फ़रवरी 2040 तक), मंगल (अप्रैल 2041 तक), राहु (फ़रवरी 2044 तक) और गुरु (अगस्त 2046 तक)। शुरुआती शनि–शनि के वर्ष स्वर तय करते हैं: तब बनाए गए वादे, ज़िम्मेदारियाँ और ढाँचे अक्सर दो दशक तक साथ चलते हैं। उसके बाद की बुध अंतर्दशा आपके धन भावों के स्वामी को सक्रिय करती है और पारंपरिक रूप से आय के लिए अच्छी है।

> ✦ गुरु महादशा 26 अगस्त 2027 को समाप्त; छठे भाव में बलवान शनि की महादशा 2046 तक।

और आगे

शनि के बाद 2046 से 2063 तक बुध की महादशा आती है, जिनके स्वामी धन भाव हैं और जो आपके लग्न में बैठे हैं, फिर 2063 से 2070 तक केतु और 2070 से शुक्र। आपकी कुंडली का लंबा चाप सीखने (गुरु) से, प्रयास और निर्माण (शनि) होते हुए, कौशल और प्रतिष्ठा के फल पाने (बुध) तक जाता है।

विंशोत्तरी महादशाएँ

मंगल 1991–1993	राहु 1993–2011	गुरु 2011–2027
शनि 2027–2046	बुध 2046–2063	केतु 2063–2070
शुक्र 2070–2090	सूर्य 2090–2096	चंद्र 2096–2106

II आज का आकाश

गोचर बताता है कि चलते ग्रह आपकी जन्म कुंडली को कैसे छूते हैं। 29 सितंबर 2026 को धीमे ग्रह आपके लिए यह कर रहे हैं।

शनि

शनि का गोचर 3 जून 2027 तक मीन में है, जो लग्न से आपका आठवाँ और चंद्रमा से छठा भाव है। चंद्रमा से छठा भाव पारंपरिक रूप से शनि के गोचर की सबसे अच्छी स्थितियों में से एक है, जो काम, सेहत की दिनचर्या और बाधाओं पर विजय को अनुकूल बनाता है। लग्न से आठवाँ भाव परिवर्तन और गुप्त विषयों में सावधानी माँगता है। इसके बाद गोचर में शनि मेष, आपके नौवें भाव, में प्रवेश करते हैं, अक्टूबर 2027 से फ़रवरी 2028 तक थोड़े समय के लिए मीन में लौटते हैं, और 23 फ़रवरी 2028 से मेष में स्थिर होते हैं।

आप साढ़े साती में नहीं हैं। आपकी पिछली ढैया (चंद्रमा से चौथे भाव में शनि) जनवरी 2020 से जनवरी 2023 तक थी। अगली ढैया, चंद्रमा से आठवें भाव में शनि, अगस्त 2029 से मई 2032 तक अपेक्षित है, और साढ़े साती अक्टूबर 2038 से दिसंबर 2046 तक। यह अभी बहुत वर्ष दूर है, और तब तक शनि महादशा का पूरा अनुभव आपके साथ होगा।

गुरु

गुरु का गोचर 31 अक्टूबर 2026 तक कर्क, आपके बारहवें भाव, में है, फिर सिंह, आपके ही लग्न और चंद्रमा से ग्यारहवें भाव, में प्रवेश होता है। गुरु 25 जून 2027 तक कर्क और सिंह के बीच आते-जाते हैं और फिर 26 नवंबर 2027 तक सिंह में रहते हैं। लग्न पर और चंद्रमा से ग्यारहवें भाव में गुरु का गोचर पारंपरिक रूप से इसकी सबसे स्वागत योग्य स्थितियों में है: आशावाद, दृश्यता, गुरुजनों का साथ और नेटवर्क से लाभ।

राहु और केतु

राहु का गोचर 5 दिसंबर 2026 तक कुंभ, आपके सातवें भाव, में है, फिर 23 जून 2028 तक मकर, आपके छठे भाव, में। छठे भाव में राहु प्रतिस्पर्धा, समस्या-समाधान और काम के लिए क्लासिक मददगार गोचर है। जून 2028 से यह धनु में लौटता है, वही राशि जिसमें यह आपके जन्म के समय था, जो पारंपरिक रूप से महत्वाकांक्षाओं के नए चक्र से जुड़ा है।

> ✦ 2026 के अंत से 2027: गुरु आपके लग्न में, राहु छठे भाव में प्रवेश करते हुए। शनि महादशा से पहले एक मददगार खिड़की।

12 आपके अगले 10 वर्ष

अक्टूबर 2026 से सितंबर 2036 तक वर्ष-दर-वर्ष: चल रही दशा, धीमे ग्रह आपके भावों (सिंह लग्न से गिने गए) में कहाँ से गुज़रते हैं, और हर वर्ष किस काम के लिए सबसे अच्छा है। प्रबलता प्रबल, मध्यम या हल्का के रूप में दी गई है।

अक्टूबर से दिसंबर 2026

आप गुरु महादशा में राहु अंतर्दशा में हैं। 31 अक्टूबर 2026 को गुरु सिंह, आपके लग्न, में प्रवेश करते हैं, और 5 दिसंबर 2026 को राहु आपके सातवें भाव से मकर, आपके छठे भाव, में जाता है। शनि का गोचर मीन, आपके आठवें भाव, में बना रहता है।

नवंबर 2026 से जनवरी 2027 तक गुरु और शनि का दोहरा गोचर आपके दसवें, दूसरे और पाँचवें भाव पर एक साथ पड़ता है: काम में पहचान और अच्छी कमाई वाला अवसर (प्रबल), और किसी रचनात्मक काम या परिवार की योजना के लिए अच्छी अवधि (मध्यम)। छठे भाव में राहु प्रतिस्पर्धा और रुके काम निपटाने में मददगार है (मध्यम)।

2027

राहु अंतर्दशा 26 अगस्त 2027 को समाप्त होती है और शनि महादशा शुरू होती है, शनि–शनि से। पूरा वर्ष दशा संधि है, यानी दो बड़ी अवधियों के बीच का बदलाव, इसलिए बड़ी नई प्रतिबद्धताएँ शुरू करने से पहले वह पूरा करें जो गुरु ने शुरू कराया था।

जनवरी से जून 2027 तक गुरु कर्क, आपके बारहवें भाव, में लौटते हैं: शांत, भीतर की ओर का समय, यात्रा या परिवार पर अधिक ख़र्च (हल्का)। 3 जून 2027 को शनि मेष, आपके नौवें भाव, में जाते हैं, और 25 जून 2027 को गुरु फिर आपके लग्न में आते हैं।

जून से अक्टूबर 2027 तक दोहरा गोचर आपके नौवें, ग्यारहवें और सातवें भाव को छूता है: गुरुजनों का साथ, लंबी दूरी की यात्रा और रिश्ते पर गंभीर बातचीत (प्रबल)। नवंबर 2027 से फ़रवरी 2028 तक यह सीधे आपके दसवें भाव पर पड़ता है: पूरी ज़िम्मेदारी के साथ करियर में एक कदम (प्रबल)।

2028

पूरे वर्ष शनि–शनि चलती है। 23 फ़रवरी 2028 से शनि मेष, आपके नौवें भाव, में स्थिर होते हैं, और 23 जून 2028 को राहु धनु, आपके पाँचवें भाव, में लौटता है, वही राशि जिसमें वह आपके जन्म के समय था।

फ़रवरी 2028 से जनवरी 2030 तक सप्तमेश की अपनी दशा में दोहरा गोचर आपके सातवें भाव और उसके स्वामी को छूता है: दशक की मुख्य विवाह या साझेदारी अवधि (प्रबल)। जुलाई से दिसंबर 2028 तक यह आपके छठे भाव पर पड़ता है: प्रतियोगी परीक्षाएँ, ऋण चुकाना और सेहत की नई दिनचर्या अनुकूल (मध्यम)। राहु की वापसी नई महत्वाकांक्षा या नई पढ़ाई लाती है (मध्यम)।

2029

शनि–शनि जारी है। वर्ष भर गुरु तुला, आपके तीसरे भाव, और कन्या, आपके दूसरे भाव, के बीच आते-जाते हैं, और अगस्त से अक्टूबर 2029 तक शनि वृषभ, आपके दसवें भाव, को छूते हैं।

दिसंबर 2028 से मार्च 2029 तक, और फिर अक्टूबर 2029 से जनवरी 2030 तक, दोहरा गोचर आपके ग्यारहवें भाव पर पड़ता है: लाभ, बोनस या संपर्कों से साथ (प्रबल)। अगस्त से अक्टूबर 2029 तक यह सीधे आपके सातवें भाव पर पड़ता है, लगन के लिए दशक के सबसे प्रबल सप्ताह (प्रबल)। अगस्त 2029 में चंद्रमा से शनि की ढैया शुरू होती है: काम का बोझ यथार्थ के अनुसार तय करें (हल्का)।

2030

29 अगस्त 2030 को शनि–शनि समाप्त होकर शनि–बुध शुरू होती है। 10 जनवरी 2030 को राहु वृश्चिक, आपके चौथे भाव, में और केतु वृषभ, आपके दसवें भाव, में जाते हैं। 17 अप्रैल 2030 से शनि का गोचर वृषभ, आपके दसवें भाव, में है।

मई से सितंबर 2030 तक दोहरा गोचर फिर आपके सातवें भाव पर है: विवाह या बिज़नेस से जुड़े साझेदारी की दूसरी प्रबल अवधि (प्रबल)। सितंबर 2030 से यह आपके चौथे, दसवें और बारहवें भाव पर जाता है: घर ख़रीदना या सुधारना (मध्यम), और काम पर अधिक ज़िम्मेदारी, आसपास पुनर्गठन के साथ (मध्यम)। केतु के इस वर्ष में आवेश में इस्तीफ़ा न दें।

2031

पूरे वर्ष शनि–बुध चलती है, जो आपके दूसरे और ग्यारहवें भाव के स्वामी को सक्रिय करती है। फ़रवरी 2031 में गुरु धनु, आपके पाँचवें भाव, में जाते हैं, जून से अक्टूबर 2031 तक वृश्चिक में लौटते हैं, और अक्टूबर 2031 में फिर धनु में आते हैं। 31 जुलाई 2031 को राहु तुला, आपके तीसरे भाव, में प्रवेश करता है।

अपने कौशल से आय में लगातार वृद्धि (प्रबल)। जून से अक्टूबर 2031 तक दोहरा गोचर आपके चौथे, दसवें और बारहवें भाव पर है: संपत्ति, अधिक अधिकार वाली भूमिका, या विदेश में काम और यात्रा (मध्यम)। तीसरे भाव में राहु लेखन, मीडिया और छोटी यात्राओं के लिए अनुकूल है (मध्यम)।

2032

शनि–बुध जारी है। वर्ष के अधिकांश भाग में गुरु का गोचर मकर, आपके छठे भाव, में है, और 30 मई 2032 को शनि मिथुन, आपके ग्यारहवें भाव, में जाते हैं, जिससे चंद्रमा से उनकी ढैया समाप्त होती है।

मार्च से मई 2032 तक दोहरा गोचर आपके दसवें भाव पर है: करियर में एक कदम (मध्यम)। अगस्त से अक्टूबर 2032 तक यह आपके ग्यारहवें, पाँचवें और पहले भाव पर एक साथ पड़ता है: दशक की सबसे अच्छी धन अवधियों में से एक (प्रबल), साथ में संतान या रचनात्मक काम के लिए अच्छा साथ (मध्यम)।

2033

8 मई 2033 को शनि–बुध समाप्त होकर शनि–केतु शुरू होती है। मार्च 2033 से मार्च 2034 तक गुरु का गोचर कुंभ, आपके सातवें भाव, में है, और फ़रवरी 2033 में राहु कन्या, आपके दूसरे भाव, में जाता है।

मार्च 2033 से मार्च 2034 तक दोहरा गोचर आपके ग्यारहवें भाव और लग्न पर पड़ता है: लाभ, पहचान और सेहत की अच्छी आदतों का फल (प्रबल)। सातवें भाव पर गुरु आपकी साझेदारी और समझौतों को सहारा देते हैं (मध्यम)। दूसरे भाव पर राहु के रहते बचत को सट्टे वाली योजनाओं से दूर रखें (हल्का)। केतु की अंतर्दशा ध्यान को भीतर, शोध, आध्यात्मिक साधना और सादगी की ओर मोड़ती है (हल्का)।

2034

16 जून 2034 को शनि–केतु समाप्त होकर शनि–शुक्र शुरू होती है। मार्च 2034 में गुरु मीन, आपके आठवें भाव, में और 12 जुलाई 2034 को शनि कर्क, आपके बारहवें भाव, में जाते हैं। 5 सितंबर 2034 को राहु सिंह, आपके लग्न, में और केतु कुंभ, आपके सातवें भाव, में प्रवेश करते हैं।

शनि–शुक्र आपके दसवें भाव के स्वामी को सक्रिय करती है: करियर, सुख-सुविधा और कलाओं के लिए फलदायी चरण (प्रबल)। जुलाई 2034 से अप्रैल 2035 तक दोहरा गोचर आपके दूसरे और बारहवें भाव पर है: बचत बढ़ती है, और लंबी यात्रा या विदेश प्रवास अनुकूल है (मध्यम)। सातवें भाव पर केतु साथी के साथ धैर्य और साझा समय माँगता है (हल्का)।

2035

शनि–शुक्र जारी है। 6 अप्रैल 2035 को गुरु मेष, आपके नौवें भाव, में जाते हैं, जबकि शनि कर्क, आपके बारहवें भाव, में बने रहते हैं।

अप्रैल 2035 से अप्रैल 2036 तक दोहरा गोचर आपके नौवें भाव पर पड़ता है: उच्च शिक्षा, कोई गुरु या मार्गदर्शक, तीर्थ और पिता के पक्ष से सौभाग्य (प्रबल)। बारहवें भाव में शनि के रहते यात्रा और विदेश से जुड़े ख़र्च ऊँचे रहते हैं (मध्यम)।

जनवरी से सितंबर 2036

शनि–शुक्र जारी है। अप्रैल से सितंबर 2036 तक गुरु का गोचर वृषभ, आपके दसवें भाव, में है, और मार्च 2036 में राहु कर्क, आपके बारहवें भाव, में जाता है। 27 अगस्त 2036 को शनि सिंह, आपके लग्न, में प्रवेश करते हैं, जिससे ज़िम्मेदारी का एक नया लंबा चक्र खुलता है।

अप्रैल से अगस्त 2036 तक दोहरा गोचर आपके दूसरे, छठे और सातवें भाव पर है: दसवें भाव पर गुरु के साथ करियर में पहचान (प्रबल), अच्छी कमाई (मध्यम) और साझेदारी में स्थिर साथ (मध्यम)।

> ✦ दशक की दिशा: पहले करियर (2026–2028), फिर साझेदारी (2028–2030), फिर आय और संपत्ति (2030–2034), फिर यात्रा, शिक्षा और कलाएँ (2034–2036)।

13 अगले 12 महीने

अक्टूबर 2026 से सितंबर 2027 तक महीने-दर-महीने: चल रही प्रत्यंतर दशा, उस महीने ग्रहों की मुख्य चाल, और किस बात की योजना बनाएँ।

अक्टूबर 2026

15 अक्टूबर 2026 तक राहु–केतु प्रत्यंतर, फिर राहु–शुक्र। 17 अक्टूबर को सूर्य तुला, आपके तीसरे भाव, में और 31 अक्टूबर 2026 को गुरु सिंह, आपके लग्न, में प्रवेश करते हैं। महीने का अंत आत्मविश्वास भरा है: जो योजनाएँ आप चाहते हैं कि लोग देखें, उन्हें शुरू करें (प्रबल)।

लग्न में गुरु आत्मविश्वास और आसपास की सद्भावना बढ़ाते हैं, और शुक्र का प्रत्यंतर बैठकों और बातचीत में आकर्षण जोड़ता है। अगर आप नई भूमिका, पढ़ाई के शुल्क या परिवार की सहमति माँगने की प्रतीक्षा कर रहे थे, तो यह अनुरोध तैयार करने का महीना है।

नवंबर 2026

राहु–शुक्र प्रत्यंतर। 12 नवंबर 2026 को मंगल सिंह, आपके लग्न, में और 16 नवंबर को सूर्य वृश्चिक, आपके चौथे भाव, में जाते हैं। ऊर्जा और जोश ऊँचे हैं; घर में क्रोध पर नियंत्रण रखें (मध्यम)। दसवें भाव पर दोहरा गोचर वेतन या भूमिका की बातचीत में मददगार है (प्रबल)।

लग्न में मंगल और गुरु दोनों के गोचर से शारीरिक ऊर्जा ऊँची है: उसे बहस के बजाय व्यायाम और किसी कठिन परियोजना में लगाएँ। इस महीने सेहत के लिए नियमित नींद रखें, क्योंकि लग्न में मंगल गर्मी बढ़ाते हैं।

दिसंबर 2026

राहु–शुक्र प्रत्यंतर। 5 दिसंबर 2026 को राहु मकर, आपके छठे भाव, में जाता है, 11 दिसंबर 2026 को शनि मार्गी होते हैं और 13 दिसंबर 2026 को गुरु वक्री होते हैं। रुके काम, ऋण और प्रतिस्पर्धा निपटाने के लिए अच्छा महीना (मध्यम)।

छठे भाव में राहु इंटरव्यू, प्रतियोगी परीक्षाओं और विवादों को उचित माध्यम से सुलझाने के लिए पारंपरिक रूप से मददगार है। काम पर साल के अंत की समीक्षा आपके पक्ष में जाती है, अगर आप धारणाओं के बजाय आँकड़े लेकर जाएँ।

जनवरी 2027

राहु–शुक्र प्रत्यंतर। 10 जनवरी 2027 को मंगल वक्री होते हैं, और 24 जनवरी 2027 को गुरु कर्क, आपके बारहवें भाव, में लौटते हैं। शुरुआत के बजाय समीक्षा करें; यात्रा और परिवार के ख़र्च बढ़ते हैं (हल्का)।

बारहवें भाव में गुरु एकांत, तीर्थ, अस्पताल या दान के काम और विदेशी संपर्कों के अनुकूल हैं। इस महीने वर्ष की योजना बनाएँ, घोषणा नहीं।

फ़रवरी 2027

राहु–शुक्र प्रत्यंतर। 13 फ़रवरी 2027 को सूर्य कुंभ, आपके सातवें भाव, में जाते हैं। साझेदारी और समझौतों पर ध्यान चाहिए, और गुरु से शनि की ओर लंबा बदलाव इसी महीने शुरू होता है (मध्यम)। बड़े और न पलटे जा सकने वाले निर्णयों से बचें।

सातवें भाव से सूर्य के आपके लग्न को देखते हुए, साथी और बिज़नेस से जुड़े सहयोगियों को अधिक जगह दें; इस महीने आग्रह से ज़्यादा साथ जीतता है।

मार्च 2027

10 मार्च 2027 तक राहु–शुक्र प्रत्यंतर, फिर राहु–सूर्य। 9 मार्च 2027 को मंगल कर्क, आपके बारहवें भाव, में और 15 मार्च को सूर्य मीन, आपके आठवें भाव, में जाते हैं। आराम, सेहत जाँच और काग़ज़ी काम इस महीने के लिए ठीक हैं (हल्का)।

बारहवें भाव में मंगल थकान या अतिरिक्त ख़र्च ला सकते हैं; बजट में गुंजाइश रखें और बिना लिखा-पढ़ी के उधार देने से बचें।

अप्रैल 2027

23 अप्रैल 2027 तक राहु–सूर्य प्रत्यंतर, फिर राहु–चंद्र। 13 अप्रैल 2027 को गुरु मार्गी होते हैं, 14 अप्रैल को सूर्य मेष, आपके नौवें भाव, में जाते हैं, और 26 अप्रैल को मंगल सिंह, आपके लग्न, में लौटते हैं। गति लौटती है; पढ़ाई की योजनाओं और मार्गदर्शकों के लिए अच्छा (मध्यम)।

अप्रैल के अंत से चंद्र का प्रत्यंतर आपको परिवार के मूड के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है; माँ के साथ या घर पर बिताया समय आपको फिर से ऊर्जा देता है।

मई 2027

राहु–चंद्र प्रत्यंतर। 15 मई 2027 को सूर्य वृषभ, आपके दसवें भाव, में जाते हैं: काम पर पहचान और अपने परिणाम प्रस्तुत करने का अवसर (मध्यम)।

लग्न से दसवें भाव में सूर्य पारंपरिक रूप से उनकी सबसे अच्छी गोचर स्थितियों में से एक है: वरिष्ठ आपको देखते हैं, और सरकारी या आधिकारिक काम तेज़ी से चलते हैं। जून में जो कुछ स्वीकृत कराना चाहते हैं, उसके काग़ज़ अभी तैयार करें।

जून 2027

राहु–चंद्र प्रत्यंतर। 3 जून 2027 को शनि मेष, आपके नौवें भाव, में जाते हैं, और 25 जून 2027 को गुरु फिर सिंह, आपके लग्न, में आते हैं। दोहरा गोचर आपके नौवें, ग्यारहवें और सातवें भाव को छूता है: लाभ, यात्रा और रिश्ते के निर्णय के लिए वर्ष के सबसे अच्छे महीनों में से एक (प्रबल)।

बारहवें भाव में पाँच महीने के बाद गुरु का आपके लग्न में लौटना फिर से रोशनी में आने जैसा लगता है। इस महीने काम और घर, दोनों जगह सबसे ज़रूरी बातचीत करें।

जुलाई 2027

5 जुलाई 2027 तक राहु–चंद्र प्रत्यंतर, फिर राहु–मंगल। 4 जुलाई को मंगल कन्या, आपके दूसरे भाव, में और 17 जुलाई को सूर्य कर्क, आपके बारहवें भाव, में जाते हैं। ख़र्च पर नज़र रखें और परिवार में नरमी से बोलें (हल्का)।

राहु अंतर्दशा के अंतिम सप्ताहों में मंगल का प्रत्यंतर जल्दबाज़ी और अधीरता ला सकता है। अधूरे काम पूरे करें, बकाया चुकाएँ, और ऐसा कोई विवाद शुरू न करें जिसे नई महादशा में ढोना पड़े।

अगस्त 2027

26 अगस्त 2027 तक राहु–मंगल प्रत्यंतर, जब शनि महादशा शुरू होती है। 9 अगस्त 2027 को शनि वक्री होते हैं। 17 अगस्त को सूर्य सिंह, आपके लग्न, में प्रवेश करते हैं। एक मोड़: जो ज़िम्मेदारी आपको दी जा रही है उसे स्वीकार करें, और वादे छोटे और पक्के रखें (प्रबल)।

नई महादशा के पहले दिन उसका स्वर तय करते हैं। एक अनुशासित आदत शुरू करें, जैसे काम, व्यायाम या प्रार्थना का निश्चित समय, और उसे निभाएँ; शनि तीव्रता से कहीं अधिक लगातार मेहनत का फल देते हैं।

सितंबर 2027

शनि–शनि के पहले सप्ताह। 9 सितंबर 2027 को शुक्र कन्या, आपके दूसरे भाव, में जाते हैं, और 17 सितंबर को सूर्य भी। वे दिनचर्या, बचत योजना और प्रतिबद्धताएँ तय करें जिन्हें आप अगले उन्नीस वर्षों तक साथ रखना चाहते हैं (मध्यम)।

> ✦ सबसे अच्छे महीने: नवंबर 2026, जून 2027 और अगस्त 2027। शांत महीने: जनवरी और मार्च 2027।

14 मुख्य मोड़

दशा संधि, यानी दो अवधियों का जोड़, वह समय है जब एक ग्रह के विषय अगले ग्रह को सौंपे जाते हैं। ये बदलाव, और आपके चंद्रमा से शनि के चरण, आने वाले वर्षों की वे धुरियाँ हैं जिन पर जीवन मुड़ता है।

गुरु से शनि: फ़रवरी 2027 से फ़रवरी 2028

आपके अगले बीस वर्षों का सबसे बड़ा मोड़ 26 अगस्त 2027 को आता है, जब गुरु महादशा समाप्त होकर शनि महादशा शुरू होती है; इसकी संधि फ़रवरी 2027 से फ़रवरी 2028 तक है। गुरु आपके लग्न में हैं और पाँचवें व आठवें भाव के स्वामी हैं, इसलिए समापन के वर्ष सीखने, संतान, शोध और निजी नवीनीकरण के रहे हैं।

शनि आपके छठे और सातवें भाव के स्वामी हैं और आपकी जन्म कुंडली में छठे भाव में अपनी राशि में बैठकर हर्ष योग बनाते हैं। उनकी अवधि नियम से काम, सेवा, स्थिर काम और दीर्घकालिक साझेदारी का फल देती है। संधि के वर्ष में जो शुरू किया है उसे पूरा करें, अचानक इस्तीफ़े या बड़े सट्टे वाले दाँव से बचें, और नई अवधि शुरू होने के बाद नई ज़िम्मेदारी लें।

> ✦ शनि महादशा 26 अगस्त 2027 से: अभी की स्थिर मेहनत टिकने वाले फल बनाती है।

शनि–शनि से शनि–बुध: जुलाई से सितंबर 2030

29 अगस्त 2030 को शनि की अंतर्दशा बुध को सौंपी जाती है, जिसकी संधि जुलाई से सितंबर 2030 तक है। बुध आपके दूसरे और ग्यारहवें भाव के स्वामी हैं और आपके लग्न में हैं, इसलिए ध्यान ढाँचा बनाने से उससे कमाने की ओर जाता है: आय, बचत, व्यापार और संवाद।

शनि–बुध से शनि–केतु: अप्रैल से जून 2033

8 मई 2033 को बुध की अंतर्दशा केतु को सौंपी जाती है, जो आपकी जन्म कुंडली में ग्यारहवें भाव में है। अप्रैल से जून 2033 की संधि लाभ इकट्ठा करने से सादगी की ओर बदलाव है: कुछ लक्ष्यों का आकर्षण घटता है, और शोध, आध्यात्मिक साधना और शांत काम का मूल्य बढ़ता है। बदलाव के समय वित्त को सरल रखें।

शनि–केतु से शनि–शुक्र: मई से जुलाई 2034

16 जून 2034 को केतु की अंतर्दशा शुक्र को सौंपी जाती है, जो आपके तीसरे और दसवें भाव के स्वामी हैं और आपके लग्न में हैं। मई से जुलाई 2034 की संधि करियर में वृद्धि, सुख-सुविधा, रचनात्मक काम और संबंधों पर ध्यान के तीन वर्षों का चरण खोलती है।

आपके चंद्रमा से शनि के चरण

अभी आप साढ़े साती में नहीं हैं। आपके चंद्रमा से शनि की ढैया, जब शनि का गोचर वृषभ में, यानी चंद्रमा से आठवें भाव में होता है, अगस्त 2029 से मई 2032 तक है: अपनी गति संभालने, सेहत की दिनचर्या बचाने और ज़रूरत से ज़्यादा ज़िम्मेदारी न लेने का समय। 27 अगस्त 2036 को शनि सिंह, आपके लग्न, में प्रवेश करते हैं, और आपकी साढ़े साती अक्टूबर 2038 से दिसंबर 2046 तक अपेक्षित है, जब तक शनि महादशा आपको उसके लिए अच्छी तरह तैयार कर चुकी होगी।

15 विवाह और रिश्तों का समय

रिश्तों का समय आपके सातवें भाव (कुंभ) और उसके स्वामी शनि से, शुक्र से, सातवें भाव या उसके स्वामी पर गुरु और शनि के दोहरे गोचर से, और इन ग्रहों की दशाओं से पढ़ा जाता है। संतान को इसी तरह आपके पाँचवें भाव (धनु) से पढ़ा जाता है, जिसके स्वामी गुरु आपके लग्न में हैं।

लगन की आपकी सबसे प्रबल अवधियाँ

जून से अक्टूबर 2027 · मध्यम से प्रबल। शनि महादशा के निकट आते हुए दोहरा गोचर आपके सातवें भाव को छूता है; गंभीर बातचीत या सगाई के लिए अच्छा समय।

फ़रवरी 2028 से जनवरी 2030 · प्रबल। आपके सप्तमेश शनि की अपनी महादशा और अंतर्दशा चलती है, जबकि दोहरा गोचर आपके सातवें भाव और उसके स्वामी को छूता है। शिखर अगस्त से अक्टूबर 2029 में है, जब दोहरा गोचर सीधे सातवें भाव पर पड़ता है।

मई से सितंबर 2030 · प्रबल। दोहरा गोचर फिर आपके सातवें भाव पर पड़ता है, विवाह या औपचारिक साझेदारी की दूसरी स्पष्ट अवधि।

मार्च 2033 से मार्च 2034 · मध्यम। गुरु का गोचर कुंभ, आपके सातवें भाव, में है, जो विवाहितों के लिए लगन के नवीनीकरण और साझा योजनाओं में मददगार है।

> ✦ मुख्य विवाह अवधि: फ़रवरी 2028 से जनवरी 2030, शिखर अगस्त से अक्टूबर 2029।

वे अवधियाँ जो धैर्य माँगती हैं

दिसंबर 2026 तक राहु का गोचर कुंभ, आपके सातवें भाव, में है: अपेक्षाएँ वास्तविकता से आगे दौड़ सकती हैं, इसलिए निर्णय से पहले समय लें (हल्का)। अगस्त 2029 से मई 2032 तक चंद्रमा से शनि की ढैया में काम साथ के समय को घेर सकता है (मध्यम)। सितंबर 2034 से मार्च 2036 तक केतु का गोचर आपके सातवें भाव में है: कुछ दूरी या उदासीनता संभव है, और नियमित साझा समय और खुली बातचीत इसका उपाय है (हल्का)।

लग्न से आपका हल्का मंगल दोष मिलान में दूसरे व्यक्ति की पूरी कुंडली के साथ तौला जाता है; यह किसी अच्छे रिश्ते को टालने का कारण नहीं है।

संतान

नवंबर 2026 से जनवरी 2027 · मध्यम। दोहरा गोचर आपके संतान वाले पाँचवें भाव पर पड़ता है, जबकि राहु अंतर्दशा उस पाँचवें भाव को सक्रिय करती है जहाँ आपकी जन्म कुंडली में राहु है।

अक्टूबर के अंत से नवंबर 2027 · हल्का से मध्यम। पाँचवें भाव पर उसी दोहरे गोचर की एक छोटी पुनरावृत्ति।

फ़रवरी से जून 2031, और अक्टूबर 2031 से मार्च 2032 · मध्यम। शनि–बुध की अवधि में गुरु का गोचर धनु, आपके पाँचवें भाव, में है।

अगस्त से अक्टूबर 2032 · मध्यम। दोहरा गोचर एक बार फिर आपके पाँचवें भाव पर पड़ता है। परिवार की योजना निजी और चिकित्सीय विषय है; ये पारंपरिक मददगार अवधियाँ हैं, निर्देश नहीं।

16 करियर और धन का समय

काम आपके दसवें भाव (वृषभ, स्वामी शुक्र आपके लग्न में) से, आय दूसरे और ग्यारहवें भाव (दोनों के स्वामी बुध) से, घर चौथे से, लंबी यात्राएँ नौवें से और विदेश बारहवें भाव से पढ़े जाते हैं, साथ में दोहरा गोचर और आपकी दशाएँ।

नौकरी बदलना और पदोन्नति

नवंबर 2026 से जनवरी 2027 · प्रबल: दोहरा गोचर आपके दसवें भाव पर पड़ता है जबकि गुरु का गोचर आपके लग्न में है। नवंबर 2027 से फ़रवरी 2028 · प्रबल: शनि महादशा की शुरुआत में दोहरा गोचर सीधे दसवें भाव पर पड़ता है, अधिक ज़िम्मेदारी वाली भूमिका के लिए सबसे अच्छी अवधि।

अप्रैल 2030 से मई 2032 तक शनि का गोचर वृषभ, आपके दसवें भाव, में है, और जुलाई 2031 तक केतु भी वहीं है: अधिक ज़िम्मेदारी और आसपास पुनर्गठन (मध्यम)। नौकरी तभी बदलें जब पक्का प्रस्ताव हाथ में हो। मार्च से मई 2032 · मध्यम: उस मेहनत के बाद एक कदम आगे। अप्रैल से सितंबर 2036 · प्रबल: आपके दसवें भाव में गुरु का गोचर पहचान लाता है।

व्यापार और साझेदारी

अगस्त 2030 से मई 2033 तक शनि–बुध व्यापार, सलाह के काम, लेखा और संवाद पर बने किसी भी काम के अनुकूल है (मध्यम से प्रबल)। साझेदारी वाला व्यापार सातवें भाव पर दोहरे गोचर की अवधियों, फ़रवरी 2028 से जनवरी 2030 और मई से सितंबर 2030, में औपचारिक करना सबसे अच्छा है (मध्यम)।

धन का लाभ और हानि

लाभ: दिसंबर 2028 से मार्च 2029, अक्टूबर 2029 से जनवरी 2030, अगस्त से अक्टूबर 2032, और मार्च 2033 से मार्च 2034 · प्रबल, जब दोहरा गोचर आपके ग्यारहवें भाव पर पड़ता है। बचत: नवंबर 2027 से फ़रवरी 2028 और जुलाई 2034 से अप्रैल 2035 · मध्यम, दूसरे भाव पर दोहरे गोचर के साथ।

जनवरी से जून 2027 तक, गुरु के कर्क, आपके बारहवें भाव, में गोचर के साथ ख़र्च ऊँचा रहता है (हल्का)। फ़रवरी 2033 से सितंबर 2034 तक राहु का गोचर कन्या, आपके दूसरे भाव, में है: सट्टे वाली योजनाओं और बिना लिखा-पढ़ी के उधार से बचें (मध्यम)। जुलाई 2034 से अगस्त 2036 तक शनि का गोचर आपके बारहवें भाव में है: यात्रा और विदेश से जुड़े ख़र्च का बजट रखें (मध्यम)।

संपत्ति और वाहन

सितंबर 2030 से फ़रवरी 2031, और जून से अक्टूबर 2031 · मध्यम से प्रबल: दोहरा गोचर आपके घर, भूमि और वाहन वाले चौथे भाव पर पड़ता है। जनवरी से मई 2030 · मध्यम: गुरु का गोचर वृश्चिक, आपके चौथे भाव, में है। जनवरी 2030 से जुलाई 2031 तक उसी भाव में राहु के गोचर के कारण स्वामित्व और काग़ज़ विशेष सावधानी से जाँचें।

विदेश यात्रा, प्रवास और शिक्षा

जून से अक्टूबर 2027 और अप्रैल 2035 से अप्रैल 2036 · मध्यम से प्रबल: दोहरा गोचर आपके नौवें भाव पर पड़ता है, जो लंबी दूरी की यात्रा, उच्च शिक्षा और तीर्थ के अनुकूल है। सितंबर 2030 से फ़रवरी 2031, जून से अक्टूबर 2031, मार्च से मई 2032 और जुलाई 2034 से अप्रैल 2035 · मध्यम: दोहरा गोचर आपके बारहवें भाव पर है, जो विदेश में काम या लंबे प्रवास का पारंपरिक सहारा है।

जून 2028 से जनवरी 2030 तक राहु का गोचर धनु, आपके पाँचवें भाव, में है: किसी नई योग्यता, तकनीकी पाठ्यक्रम या प्रमाणपत्र की ओर प्रबल खिंचाव (मध्यम)।

> ✦ धन के सबसे अच्छे वर्ष: 2032 से 2034। करियर के सबसे अच्छे कदम: नवंबर 2026 से जनवरी 2027 और नवंबर 2027 से फ़रवरी 2028।

17 सोलह वर्ग कुंडलियाँ

पराशर हर राशि को सूक्ष्म भागों में बाँटते हैं ताकि जीवन के अलग-अलग क्षेत्र पढ़े जा सकें। ये षोडशवर्ग की सोलह कुंडलियाँ हैं। हर खंड अपनी कुंडली का नाम लेता है, क्योंकि किसी वर्ग कुंडली की स्थिति आपकी जन्म कुंडली की स्थिति नहीं है।

राशि (D1) और होरा (D2)

राशि कुंडली स्वयं आपकी जन्म कुंडली है, जिसका वर्णन पूरी रिपोर्ट में है। धन की कुंडली होरा (D2) में आपका लग्न सिंह है और सूर्य, चंद्रमा, बुध, गुरु और शुक्र सभी सूर्य की होरा, सिंह, में आते हैं: मेहनत, प्रतिष्ठा और अपने नाम से कमाया धन।

द्रेष्काण (D3) और चतुर्थांश (D4)

भाई-बहनों और साहस की कुंडली द्रेष्काण (D3) में आपका लग्न सिंह है और मंगल अपनी राशि मेष में हैं: साहस और पहल सच्ची शक्तियाँ हैं, और भाई-बहन ऊर्जावान और स्वतंत्र होने की संभावना है।

घर, संपत्ति और भाग्य की कुंडली चतुर्थांश (D4) में आपका लग्न सिंह है और गुरु D4 लग्न में बैठे हैं, जिसे परंपरा में घर और स्थायी संपत्ति के लिए रक्षक संकेत माना जाता है।

सप्तांश (D7) और नवांश (D9)

संतान की कुंडली सप्तांश (D7) में लग्न कन्या है और मंगल D7 लग्न से पाँचवीं राशि मकर में उच्च के हैं: संतान के लिए बलवान, ऊर्जावान संकेत।

विवाह, धर्म और भीतरी बल की कुंडली नवांश (D9) में लग्न वृषभ है, चंद्रमा तुला में ही रहते हैं (वर्गोत्तम) और शुक्र कर्क में हैं, जो स्नेह की राशि है। आपका भीतरी स्वभाव सुरक्षा, निष्ठा और धैर्य को महत्व देता है।

दशमांश (D10) और द्वादशांश (D12)

करियर की कुंडली दशमांश (D10) में लग्न तुला है और चंद्रमा उसी में हैं, मंगल D10 के सातवें में अपनी राशि मेष में हैं, और गुरु D10 के ग्यारहवें में सिंह में हैं: कूटनीति, मज़बूत साझेदारियाँ और प्रतिष्ठा से लाभ।

माता-पिता की कुंडली द्वादशांश (D12) में लग्न तुला है और गुरु D12 लग्न से ग्यारहवीं राशि सिंह में हैं, जो माता-पिता से मिलने वाले साथ का शुभ संकेत है।

षोडशांश (D16) और विंशांश (D20)

वाहन और सुख-सुविधाओं की कुंडली षोडशांश (D16) में लग्न वृश्चिक है और गुरु D16 के दसवें, सिंह, में हैं: सुख-सुविधाएँ प्रायः काम और प्रतिष्ठा से आती हैं।

आध्यात्मिक साधना की कुंडली विंशांश (D20) में लग्न मेष है, मंगल D20 लग्न में अपनी राशि में हैं और गुरु धनु, अपनी राशि, में हैं: अनुशासित, सक्रिय साधना आपको जँचती है, किसी सम्मानित गुरु के मार्गदर्शन में।

चतुर्विंशांश (D24) और भांश (D27)

शिक्षा की कुंडली चतुर्विंशांश (D24) में लग्न मकर है और शनि D24 लग्न में स्वराशि में हैं: धीमी, गहरी और व्यवस्थित पढ़ाई, और लगन से मिलने वाली योग्यताएँ।

बल और सहनशक्ति की कुंडली भांश (D27) में लग्न कन्या है, गुरु मेष में और शुक्र मकर में हैं, जबकि सूर्य, मंगल और शनि D27 के छठे, कुंभ, में एकत्र हैं: सहनशक्ति जो सबसे अधिक काम और सेवा में दिखती है।

त्रिंशांश (D30) और खवेदांश (D40)

परंपरा में कठिनाइयों और चरित्र के लिए पढ़ी जाने वाली त्रिंशांश (D30) कुंडली में लग्न कुंभ है और गुरु D30 के तीसरे, मेष, में हैं: कठिनाई का सामना साहस और अच्छे विवेक से करने की क्षमता।

मातृ पक्ष की विरासत की कुंडली खवेदांश (D40) में लग्न धनु है और चंद्रमा अपनी राशि कर्क में हैं: माता के पक्ष से स्नेहपूर्ण, सहयोगी विरासत।

अक्षवेदांश (D45) और षष्ट्यंश (D60)

पितृ पक्ष की विरासत और आचरण की कुंडली अक्षवेदांश (D45) में लग्न वृषभ है, चंद्रमा सिंह में हैं और गुरु भी सिंह में बैठे हैं।

सबसे सूक्ष्म विभाजन और परंपरा में पूर्व कर्म की कुंडली षष्ट्यंश (D60) में लग्न सिंह है, वही जो आपका जन्म लग्न है, और गुरु D60 लग्न में बैठे हैं। D60 लग्न का जन्म लग्न से मेल ऐसे जीवन का संकेत माना जाता है जिसमें बाहरी मार्ग और भीतरी कर्म एक ही दिशा दिखाते हैं।

सभी वर्गों में दिखता सूत्र

सिंह के 0°08′ पर बैठे आपके गुरु सोलह में से ग्यारह वर्ग कुंडलियों में सिंह में आते हैं: राशि, होरा, द्रेष्काण, चतुर्थांश, सप्तांश, दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, चतुर्विंशांश, अक्षवेदांश और षष्ट्यंश। इतने वर्गों में एक ही राशि पर टिका ग्रह परंपरा में स्थिर, भरोसेमंद प्रभाव माना जाता है। आपके लिए वह ग्रह गुरु हैं: ज्ञान, परामर्श और विकास जीवन के हर क्षेत्र में लौटते हैं।

> ✦ सोलह में से ग्यारह वर्ग कुंडलियों में गुरु सिंह में: जीवन के हर क्षेत्र में ज्ञान का स्थिर सूत्र।

18 अष्टकवर्ग विस्तार से

आपके भावों के अंक

आपका सर्वाष्टकवर्ग कुल 337 है, जो शास्त्रीय निश्चित योग है। लग्न से भाव के अनुसार अंक हैं: पहला 30, दूसरा 21, तीसरा 26, चौथा 27, पाँचवाँ 27, छठा 32, सातवाँ 19, आठवाँ 27, नौवाँ 28, दसवाँ 37, ग्यारहवाँ 41 और बारहवाँ 22। परंपरा में 28 या अधिक अंक बलवान माने जाते हैं; 25 से कम पर सावधानी चाहिए।

आपके सबसे बलवान भाव ग्यारहवाँ (41, लाभ और संपर्क) और दसवाँ (37, करियर और प्रतिष्ठा) हैं, फिर छठा (32, काम और सेवा)। सावधानी माँगने वाले भाव सातवाँ (19, साझेदारी), दूसरा (21, बचत) और बारहवाँ (22, खर्च) हैं। कुंडली अच्छी कमाई और मेहनत दिखाती है, और बचत, खर्च और साझेदारी में सोच-समझकर चलने को कहती है।

> ✦ सबसे बलवान: ग्यारहवाँ (41) और दसवाँ (37)। सावधानी: सातवाँ (19), दूसरा (21) और बारहवाँ (22)।

19 विंशोत्तरी, योगिनी और चर दशा

विंशोत्तरी

आप 26 अगस्त 2027 तक गुरु महादशा में हैं, उसकी अंतिम अंतर्दशा राहु में। फिर आपकी उन्नीस वर्ष की शनि महादशा शुरू होती है, शनि, बुध, केतु, शुक्र, सूर्य, चंद्र, मंगल, राहु और गुरु अंतर्दशाओं के साथ, 26 अगस्त 2046 तक, और उसके बाद 2063 तक बुध महादशा।

योगिनी, और जहाँ दोनों सहमत हैं

योगिनी दशा में आप 28 नवंबर 2026 तक राहु की संकटा में हैं; फिर नवंबर 2027 तक चंद्रमा की मंगला, नवंबर 2029 तक सूर्य की पिंगला, नवंबर 2032 तक गुरु की धान्या, नवंबर 2036 तक मंगल की भ्रामरी और नवंबर 2041 तक बुध की भद्रिका।

दोनों पद्धतियाँ अभी उल्लेखनीय रूप से सहमत हैं: दोनों एक ही समय राहु की अवधि चला रही हैं, योगिनी में संकटा और विंशोत्तरी में राहु अंतर्दशा। और 2030 के आसपास दोनों गुरु और बुध की ओर मुड़ती हैं, धान्या योगिनी (2029–2032) और बुध अंतर्दशा (2030–2033), जिसे परंपरा में शिक्षा और लाभ का बलवान समय माना जाता है।

> ✦ तीन दशा पद्धतियाँ अभी राहु की अवधि में हैं, और 2029–2030 से दोनों गुरु और बुध की ओर मुड़ती हैं।

जैमिनी चर दशा

जैमिनी की चर दशा ग्रहों के बजाय राशियों से चलती है। आपकी चर दशा जन्म पर सिंह दशा से शुरू हुई और 14 अगस्त 2020 से मकर दशा चल रही है; यह बारह वर्ष, 14 अगस्त 2032 तक चलती है, क्योंकि मकर के स्वामी शनि मकर में ही, अपने घर में बैठे हैं। फिर कुंभ दशा (दो वर्ष, 2034 तक), मीन (सात वर्ष, 2041 तक), मेष (चार वर्ष, 2045 तक), वृषभ (तीन वर्ष, 2048 तक) और मिथुन (दो वर्ष, 2050 तक) आती हैं।

मकर आपकी जन्म कुंडली का छठा भाव है, काम, सेवा और बाधाओं पर विजय का भाव, और उसमें शनि हैं। 2027 में शुरू होने वाली शनि महादशा से मेल खाती बारह वर्ष की मकर दशा तीसरी पद्धति है जो उसी विषय की ओर संकेत करती है: अनुशासित काम, स्थिर प्रयास और वर्षों में बनने वाले फल।

> ✦ चर दशा: बारह वर्ष की मकर दशा (2020–2032), जिसके स्वामी शनि अपने घर में हैं, शनि महादशा की शुरुआत से मेल खाती।

20 KP: नक्षत्र और उप स्वामी

कृष्णमूर्ति पद्धति (KP) हर स्थिति को राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी और उप स्वामी देती है, जिससे हर ग्रह का पाठ और सूक्ष्म होता है।

लग्न और चंद्रमा

आपके लग्न का नक्षत्र स्वामी केतु (मघा) और उप स्वामी राहु है। KP में लग्न का उप स्वामी व्यक्ति की समग्र दिशा बताता है; राहु का उप महत्वाकांक्षा, नए रूप में ढलने और अलग राह का संकेत है।

आपके चंद्रमा का नक्षत्र स्वामी मंगल (चित्रा) और उप स्वामी शुक्र है। आपकी कुंडली का मन मंगल से ऊर्जा और शुक्र से परिष्कार पाता है: तेज़ भावना, सौंदर्य और सामंजस्य से प्रेम।

बाकी ग्रह

पाँच ग्रहों, सूर्य, बुध, शुक्र, राहु और केतु, का उप स्वामी शनि है, जो असामान्य है और आपकी कुंडली और आने वाली शनि महादशा के शनि वाले स्वर को पक्का करता है: स्थिर, व्यवस्थित फल। शनि का अपना उप स्वामी शुक्र है, गुरु का केतु और मंगल का बुध।

21 आपका आने वाला वर्ष (वर्षफल)

2026–27 का वर्षफल

आपका छत्तीसवाँ वर्ष 15 अगस्त 2026 को 05:56 IST पर आपकी सूर्य वापसी से शुरू हुआ। वर्ष लग्न कर्क है और मुंथा वार्षिक पहले भाव में है, जिसके स्वामी चंद्रमा हैं। वर्ष के अधिकारी चंद्रमा और सूर्य हैं, दोनों चार में से दो-दो पद सँभालते हैं: मकसद और घर-परिवार की देखभाल में संतुलन का वर्ष, और वार्षिक लग्न में गुरु रक्षक उपस्थिति के रूप में।

22 उपाय

उपाय आपकी कुंडली के साथ काम करने के तरीके हैं, गारंटी नहीं। नीचे दिए उपाय आपकी कुंडली के उन ग्रहों के अनुसार हैं जिन्हें सहारे की ज़रूरत है। जो सही लगे वह अपनाएँ, बाकी छोड़ दें।

सूर्य के लिए, बारहवें भाव में आपके लग्नेश

उगते सूर्य को जल अर्पित करना, रविवार को गायत्री मंत्र या आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ, और पिता व बड़ों के प्रति सम्मान के सरल कार्य क्लासिक उपाय हैं। बारहवें भाव की स्थिति को देखते हुए, नींद और शांत समय की रक्षा करने वाली दिनचर्या अपने आप में यहाँ सूर्य का उपाय है।

मंत्र: ॐ सूर्याय नमः, रविवार सुबह 108 बार। दान: रविवार को गेहूँ, गुड़ या लाल वस्त्र। रुद्राक्ष: एकमुखी, जो पारंपरिक रूप से सूर्य से जुड़ा है।

शनि के लिए, आने वाली महादशा के स्वामी

आपकी कुंडली में शनि पहले से बलवान हैं, इसलिए पारंपरिक सलाह उन्हें मनाने के बजाय उनका साथ देने की है: वादे निभाएँ, कम पारिश्रमिक पर मेहनत करने वालों की सेवा करें, और शरीर को सक्रिय रखें। बहुत-से परिवार शनिवार को तिल के तेल का दीपक जलाते हैं या शनि स्तोत्र का पाठ करते हैं। शनि महादशा से पहले और उसके दौरान शनिवार को श्रमिकों या बुज़ुर्गों को दान एक पारंपरिक उपाय है।

मंत्र: ॐ शं शनैश्चराय नमः, शनिवार को 108 बार, विशेष रूप से 26 अगस्त 2027 को शनि महादशा की शुरुआत से, और अगस्त 2029 से मई 2032 तक शनि की ढैया के दौरान। दान: शनिवार को काले तिल, सरसों का तेल या गर्म कंबल। व्रत: सेहत अनुमति दे तो शनिवार का सादा व्रत।

मंगल और मांगलिक दोष के लिए

लग्न में बलवान मंगल का सबसे व्यावहारिक उपाय नियमित व्यायाम है। पारंपरिक रूप से मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ और हनुमान मंदिर जाना मंगल को शांत करने से जुड़ा है।

मंत्र: ॐ भौमाय नमः, मंगलवार को 108 बार। दान: मंगलवार को मसूर की दाल। रुद्राक्ष: तीनमुखी।

राहु के लिए, अगस्त 2027 तक

आपकी जन्म कुंडली में राहु पाँचवें भाव में है। इसकी अंतर्दशा 26 अगस्त 2027 तक चलती है: शनिवार को ॐ राहवे नमः का 108 बार जाप करें, और देवी दुर्गा की उपासना राहु का पारंपरिक उपाय है। इस अंतर्दशा में अपने वित्त को सट्टे और शॉर्टकट से दूर रखें।

गुरु के लिए, आपके पाँचवें भाव के स्वामी

गुरु आपके संतान और शिक्षा वाले पाँचवें भाव के और आठवें भाव के भी स्वामी हैं, और आपके लग्न में अस्त हैं। मंत्र: ॐ बृहस्पतये नमः, गुरुवार को 108 बार। गुरुजनों का सम्मान और गुरुवार को पुस्तकें, हल्दी या चने की दाल का दान पारंपरिक है; रुद्राक्ष पाँचमुखी है।

रत्न

शास्त्र माणिक्य को सूर्य से और मूंगे को मंगल से जोड़ते हैं, जो सिंह लग्न के योगकारक हैं। रत्न एक पारंपरिक उपाय है, नुस्ख़ा नहीं। कोई भी रत्न पहनने से पहले किसी भरोसेमंद ज्योतिषी से पूरी कुंडली दिखाएँ, और कभी भी महँगा रत्न ख़रीदने का दबाव महसूस न करें।

आपके लग्नेश सूर्य के लिए माणिक्य: सोने या ताँबे में, अनामिका में, पहली बार रविवार सुबह पहनें; लाल तामड़ा या लाल स्पिनेल पारंपरिक विकल्प हैं। चौथे और नौवें भाव के स्वामी मंगल के लिए मूंगा: सोना या ताँबा, अनामिका, मंगलवार सुबह; लाल अकीक इसका विकल्प है। गुरु के लिए पुखराज: सोना, तर्जनी, गुरुवार सुबह; सुनहला या पीला पुखराज (टोपाज़) विकल्प हैं, और क्योंकि गुरु आपके आठवें भाव के भी स्वामी हैं, परंपरा इस रत्न में विशेष सावधानी कहती है। वज़न आपकी कुंडली देखने वाले ज्योतिषी तय करते हैं।

23 यह रिपोर्ट कैसे बनी

हर स्थिति की गणना iAstroGuru Engine ने की: लाहिड़ी अयनांश, पूर्ण राशि भाव, सोलह वर्गों और अष्टकवर्ग के लिए पराशरी नियम, विंशोत्तरी और योगिनी दशाएँ, के.एन. राव पद्धति से जैमिनी चर दशा, मानक 249 उप विभाजन से KP स्वामी, और वर्षफल के लिए ताजिक सूर्य वापसी।

पाठ इन्हीं गणित तथ्यों से लिखा गया और जारी करने से पहले कुंडली से स्वतः जाँचा गया। ज्योतिष एक व्याख्यात्मक परंपरा है, और यहाँ कुछ भी चिकित्सा, कानूनी या पैसे संबंधी सलाह नहीं है। यह नमूना एक काल्पनिक व्यक्ति, आरव शर्मा, के लिए तैयार किया गया था।

परिशिष्ट: आपकी गणनाएँ

इस रिपोर्ट के पीछे की पूरी तालिकाएँ, iAstroGuru इंजन द्वारा आपके जन्म जानकारी से गणना की गई। निरयन राशिचक्र, लाहिड़ी अयनांश; तिथियाँ दिन तक दी गई हैं।

जन्म जानकारी और पंचांग

नाम	Aarav Sharma
जन्म तिथि	15 अग॰ 1991
जन्म समय	06:40
जन्म स्थान	Jaipur, Rajasthan, India
अक्षांश, देशांतर	26.9124°, 75.7873°
समय क्षेत्र	Asia/Kolkata (UTC+05:30)
वार	गुरुवार
तिथि	शुक्ल षष्ठी
नक्षत्र	चित्रा
योग	शुभ
करण	कौलव
सूर्योदय	05:57:57
सूर्यास्त	19:04:33
अयनांश (लाहिड़ी)	23°44′41″

सूर्योदय और सूर्यास्त उसी घड़ी पर हैं जिस पर जन्म समय दिया गया है।

ग्रह स्थिति

व = वक्री, अ = अस्त। ग्रह स्थिति और नक्षत्र लाहिड़ी अयनांश से हैं; भाव लग्न से पूरी राशियों में गिने गए हैं। अवस्था राशि में अंश से बालादि अवस्था है। नक्षत्र और उप स्वामी केपी (कृष्णमूर्ति) अयनांश से हैं।

ग्रह स्थिति

ग्रह	भोगांश	राशि	अंश	नक्षत्र · पद	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी	भाव	बल	व / अ	अवस्था
लग्न	126°18′41″	सिंह	6°18′41″	मघा 2	केतु	राहु	1	—	—	—
सूर्य	117°59′44″	कर्क	27°59′44″	आश्लेषा 4	बुध	शनि	12	मित्र राशि	—	बाल
चंद्र	182°47′53″	तुला	2°47′53″	चित्रा 3	मंगल	शुक्र	3	सम राशि	—	बाल
मंगल	145°16′21″	सिंह	25°16′21″	पूर्वा फाल्गुनी 4	शुक्र	बुध	1	मित्र राशि	—	मृत
बुध	129°57′19″	सिंह	9°57′19″	मघा 3	केतु	शनि	1	मित्र राशि	व अ	कुमार
गुरु	120°08′13″	सिंह	0°08′13″	मघा 1	केतु	केतु	1	मित्र राशि	अ	बाल
शुक्र	130°01′14″	सिंह	10°01′14″	मघा 4	केतु	शनि	1	शत्रु राशि	व	कुमार
शनि	278°23′23″	मकर	8°23′23″	उत्तराषाढ़ा 4	सूर्य	शुक्र	6	स्वराशि	व	वृद्ध
राहु	263°25′12″	धनु	23°25′12″	पूर्वाषाढ़ा 4	शुक्र	शनि	5	—	—	वृद्ध
केतु	83°25′12″	मिथुन	23°25′12″	पुनर्वसु 2	गुरु	शनि	11	—	—	वृद्ध

वर्ग कुंडलियाँ (षोडशवर्ग)

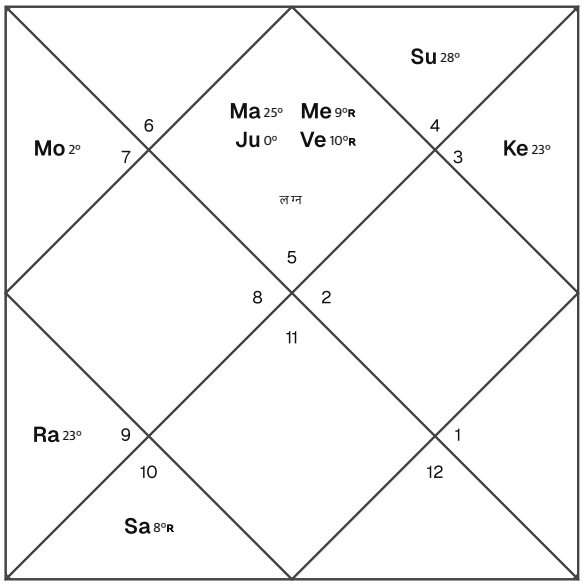

राशि (D1) · शरीर और पूरा जीवन

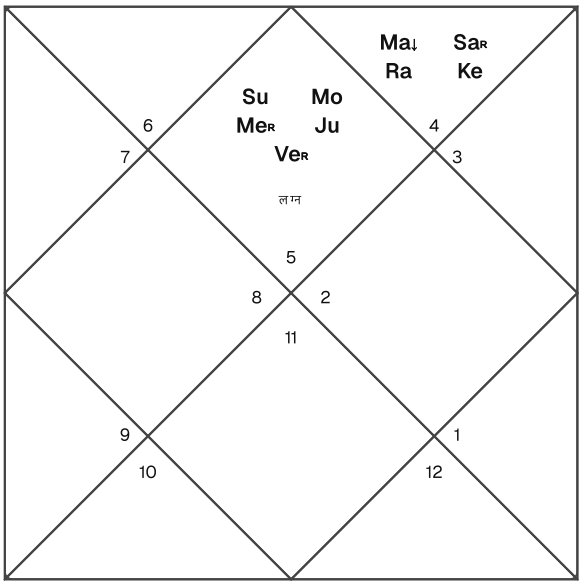

होरा (D2) · धन

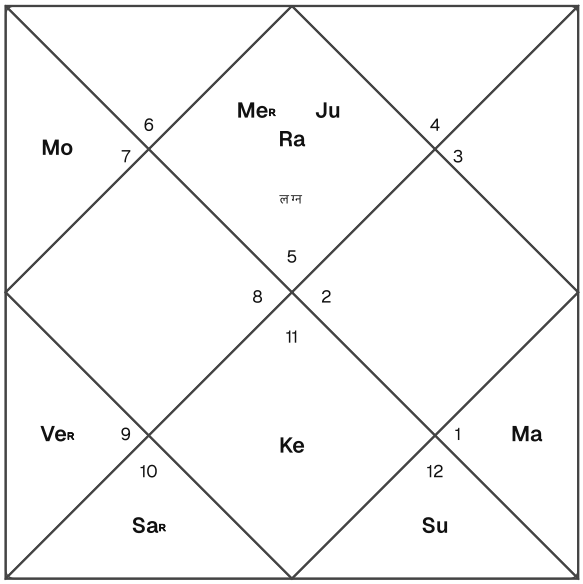

द्रेष्काण (D3) · भाई-बहन और साहस

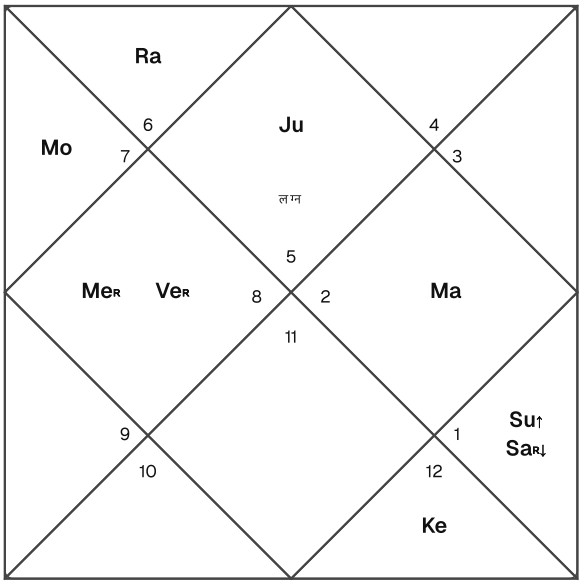

चतुर्थांश (D4) · घर, संपत्ति और भाग्य

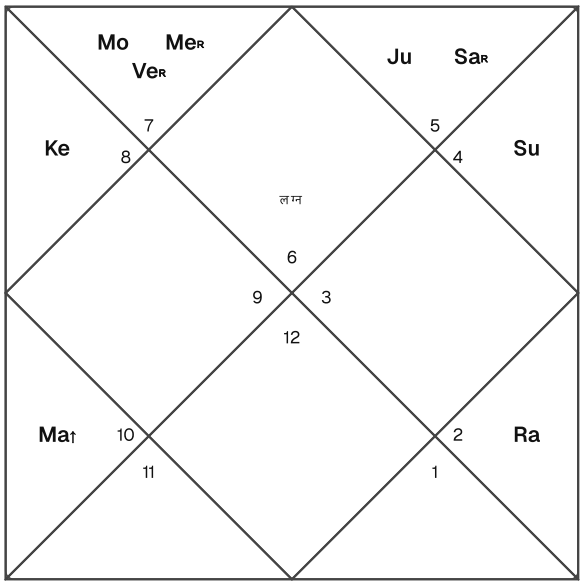

सप्तांश (D7) · संतान

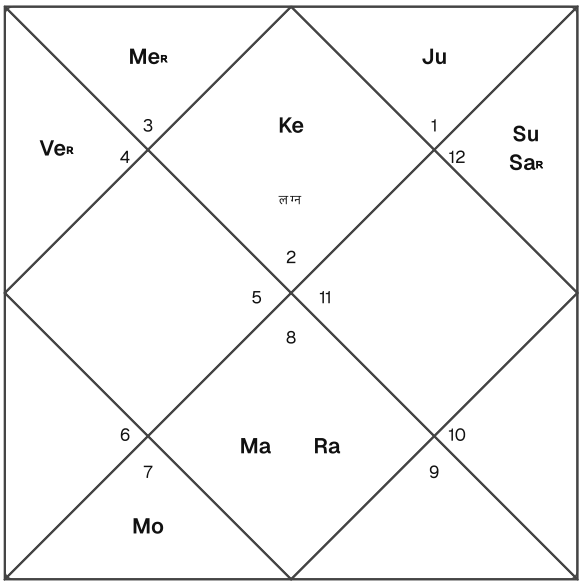

नवांश (D9) · विवाह, धर्म और आंतरिक बल

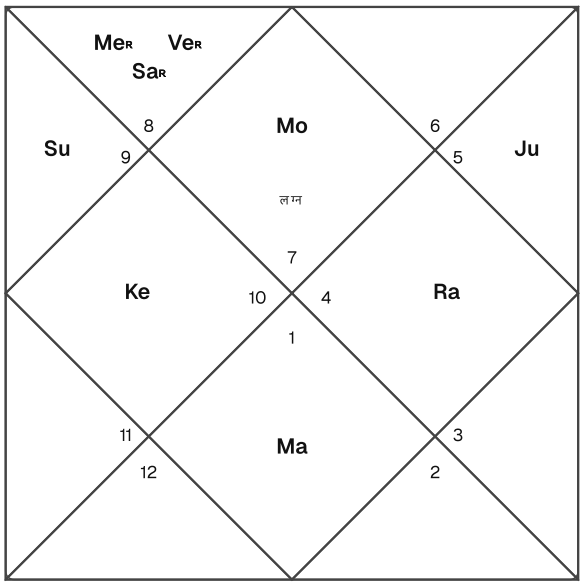

दशमांश (D10) · करियर और पद

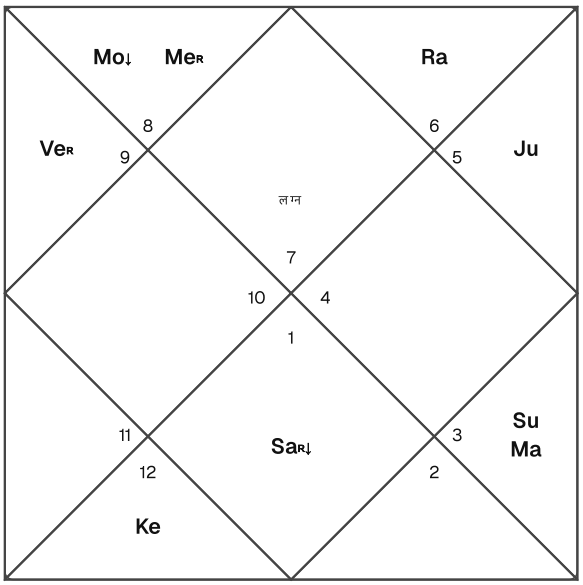

द्वादशांश (D12) · माता-पिता

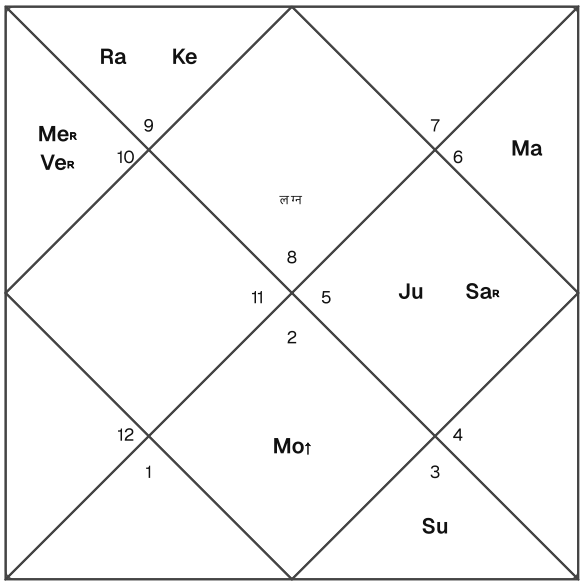

षोडशांश (D16) · वाहन और सुख

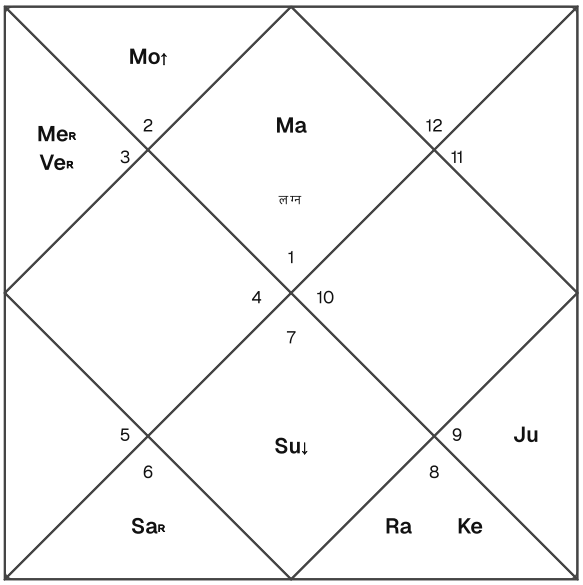

विंशांश (D20) · साधना

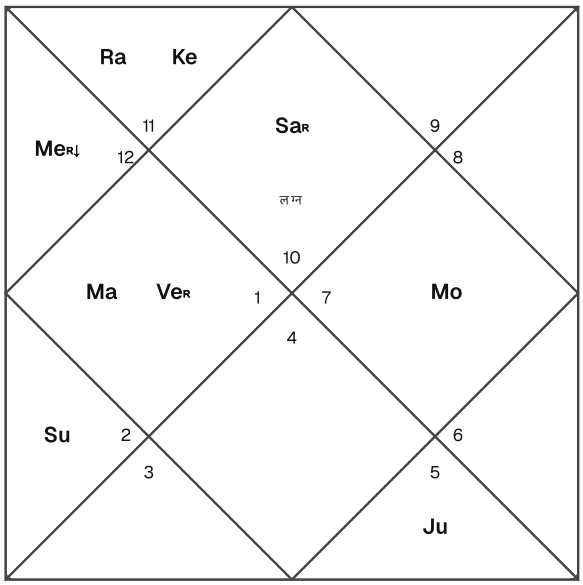

चतुर्विंशांश (D24) · शिक्षा

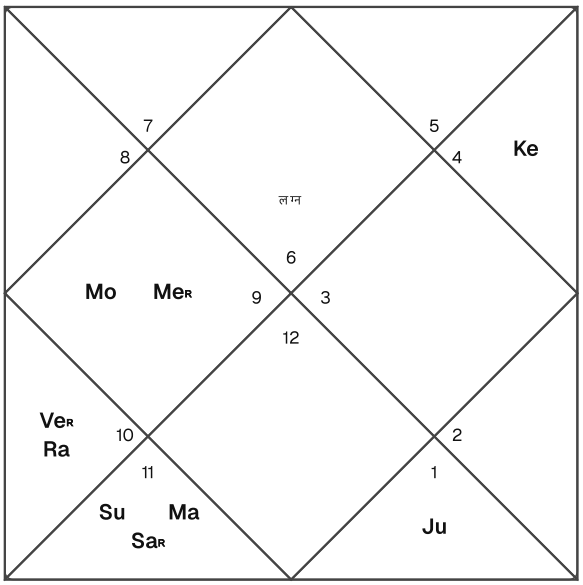

भांश (D27) · बल और सहनशक्ति

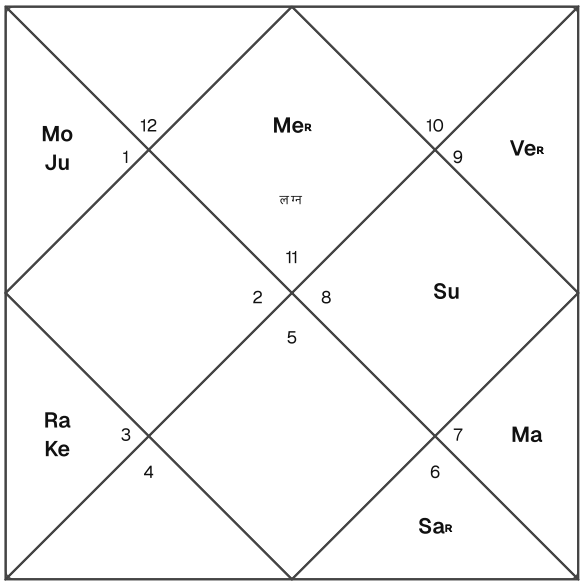

त्रिंशांश (D30) · कष्ट और चरित्र

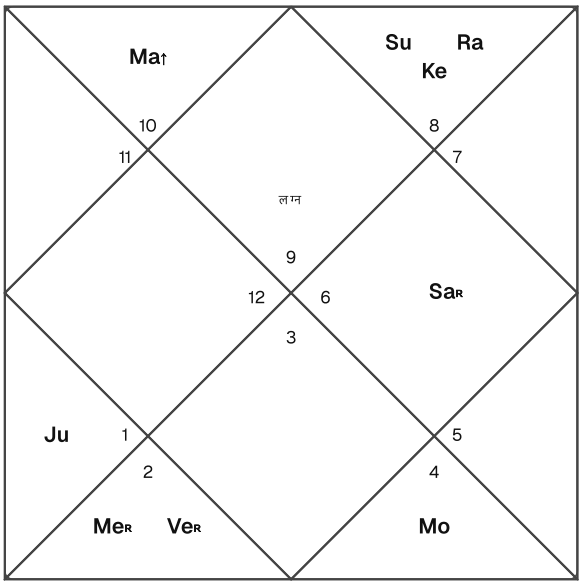

खवेदांश (D40) · मातृ पक्ष की विरासत

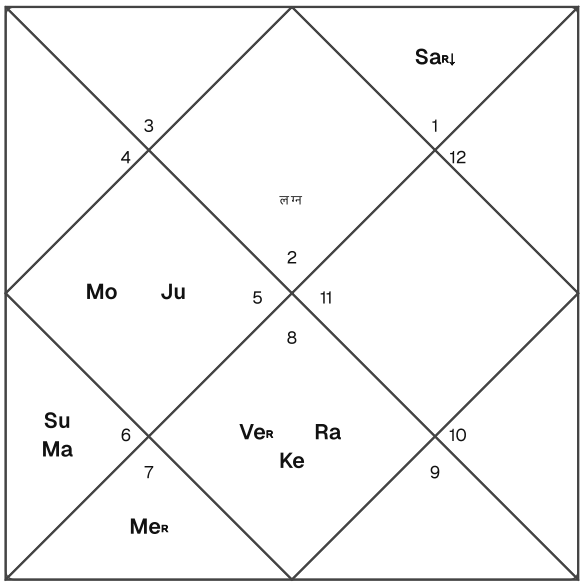

अक्षवेदांश (D45) · पितृ पक्ष की विरासत और आचरण

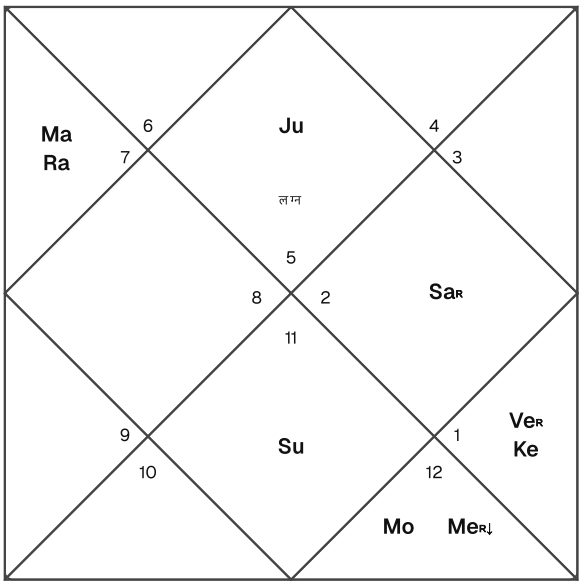

षष्ट्यंश (D60) · पूर्व कर्म, सबसे सूक्ष्म जानकारी

हर वर्ग कुंडली में हर ग्रह की राशि

कुंडली	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
D1	सिंह	कर्क	तुला	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	मकर	धनु	मिथुन
D2	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क
D3	सिंह	मीन	तुला	मेष	सिंह	सिंह	धनु	मकर	सिंह	कुंभ
D4	सिंह	मेष	तुला	वृषभ	वृश्चिक	सिंह	वृश्चिक	मेष	कन्या	मीन
D7	कन्या	कर्क	तुला	मकर	तुला	सिंह	तुला	सिंह	वृषभ	वृश्चिक
D9	वृषभ	मीन	तुला	वृश्चिक	मिथुन	मेष	कर्क	मीन	वृश्चिक	वृषभ
D10	तुला	धनु	तुला	मेष	वृश्चिक	सिंह	वृश्चिक	वृश्चिक	कर्क	मकर
D12	तुला	मिथुन	वृश्चिक	मिथुन	वृश्चिक	सिंह	धनु	मेष	कन्या	मीन
D16	वृश्चिक	मिथुन	वृषभ	कन्या	मकर	सिंह	मकर	सिंह	धनु	धनु
D20	मेष	तुला	वृषभ	मेष	मिथुन	धनु	मिथुन	कन्या	वृश्चिक	वृश्चिक
D24	मकर	वृषभ	तुला	मेष	मीन	सिंह	मेष	मकर	कुंभ	कुंभ
D27	कन्या	कुंभ	धनु	कुंभ	धनु	मेष	मकर	कुंभ	मकर	कर्क
D30	कुंभ	वृश्चिक	मेष	तुला	कुंभ	मेष	धनु	कन्या	मिथुन	मिथुन
D40	धनु	वृश्चिक	कर्क	मकर	वृषभ	मेष	वृषभ	कन्या	वृश्चिक	वृश्चिक
D45	वृषभ	कन्या	सिंह	कन्या	तुला	सिंह	वृश्चिक	मेष	वृश्चिक	वृश्चिक
D60	सिंह	कुंभ	मीन	तुला	मीन	सिंह	मेष	वृषभ	तुला	मेष

अष्टकवर्ग

राशियाँ मेष से गिनी गई हैं। जिस राशि में ग्रह के अधिक बिंदु हों, वहाँ गोचर में वह बेहतर फल देता है; 28 या अधिक सर्वाष्टकवर्ग बिंदु पारंपरिक रूप से बलवान हैं।

भिन्नाष्टकवर्ग (हर ग्रह के राशि अनुसार बिंदु)

ग्रह	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	कुल
सूर्य	5	4	4	6	4	2	4	3	3	6	4	3	48
चंद्र	4	7	6	2	3	2	5	4	5	3	4	4	49
मंगल	2	4	5	3	4	3	3	3	3	5	1	3	39
बुध	4	5	6	4	6	4	3	6	3	5	2	6	54
गुरु	5	7	7	1	6	6	2	5	4	4	5	4	56
शुक्र	6	5	7	1	4	4	6	4	6	3	2	4	52
शनि	2	5	6	5	3	0	3	2	3	6	1	3	39
सर्वाष्टकवर्ग	28	37	41	22	30	21	26	27	27	32	19	27	337

विंशोत्तरी दशा

सभी महादशाएँ और उनकी अंतर्दशाएँ। पहली महादशा जन्म के समय की शेष दशा है, इसलिए उसकी पहले की अंतर्दशाएँ नहीं दी गईं।

महादशा

महादशा	से	तक
मंगल	15 अग॰ 1991	25 अग॰ 1993
राहु	25 अग॰ 1993	26 अग॰ 2011
गुरु ✦	26 अग॰ 2011	26 अग॰ 2027
शनि	26 अग॰ 2027	26 अग॰ 2046
बुध	26 अग॰ 2046	26 अग॰ 2063
केतु	26 अग॰ 2063	26 अग॰ 2070
शुक्र	26 अग॰ 2070	26 अग॰ 2090
सूर्य	26 अग॰ 2090	25 अग॰ 2096
चंद्र	25 अग॰ 2096	27 अग॰ 2106
मंगल	27 अग॰ 2106	26 अग॰ 2113

महादशा: मंगल

अंतर्दशा	से	तक
शुक्र	20 जुल॰ 1991	18 सित॰ 1992
सूर्य	18 सित॰ 1992	24 जन॰ 1993
चंद्र	24 जन॰ 1993	25 अग॰ 1993

महादशा: राहु

अंतर्दशा	से	तक
राहु	25 अग॰ 1993	8 मई 1996
गुरु	8 मई 1996	1 अक्टू॰ 1998
शनि	1 अक्टू॰ 1998	7 अग॰ 2001
बुध	7 अग॰ 2001	25 फ़र॰ 2004
केतु	25 फ़र॰ 2004	14 मार्च 2005
शुक्र	14 मार्च 2005	14 मार्च 2008
सूर्य	14 मार्च 2008	5 फ़र॰ 2009
चंद्र	5 फ़र॰ 2009	7 अग॰ 2010
मंगल	7 अग॰ 2010	26 अग॰ 2011

महादशा: गुरु

अंतर्दशा	से	तक
गुरु	26 अग॰ 2011	13 अक्टू॰ 2013
शनि	13 अक्टू॰ 2013	25 अप्रैल 2016
बुध	25 अप्रैल 2016	1 अग॰ 2018
केतु	1 अग॰ 2018	8 जुल॰ 2019
शुक्र	8 जुल॰ 2019	8 मार्च 2022
सूर्य	8 मार्च 2022	25 दिस॰ 2022
चंद्र	25 दिस॰ 2022	25 अप्रैल 2024
मंगल	25 अप्रैल 2024	1 अप्रैल 2025
राहु ✦	1 अप्रैल 2025	26 अग॰ 2027

महादशा: शनि

अंतर्दशा	से	तक
शनि	26 अग॰ 2027	29 अग॰ 2030
बुध	29 अग॰ 2030	8 मई 2033
केतु	8 मई 2033	17 जून 2034
शुक्र	17 जून 2034	16 अग॰ 2037
सूर्य	16 अग॰ 2037	29 जुल॰ 2038
चंद्र	29 जुल॰ 2038	28 फ़र॰ 2040
मंगल	28 फ़र॰ 2040	7 अप्रैल 2041
राहु	7 अप्रैल 2041	12 फ़र॰ 2044
गुरु	12 फ़र॰ 2044	26 अग॰ 2046

महादशा: बुध

अंतर्दशा	से	तक
बुध	26 अग॰ 2046	21 जन॰ 2049
केतु	21 जन॰ 2049	18 जन॰ 2050
शुक्र	18 जन॰ 2050	18 नव॰ 2052
सूर्य	18 नव॰ 2052	25 सित॰ 2053
चंद्र	25 सित॰ 2053	24 फ़र॰ 2055
मंगल	24 फ़र॰ 2055	21 फ़र॰ 2056
राहु	21 फ़र॰ 2056	10 सित॰ 2058
गुरु	10 सित॰ 2058	16 दिस॰ 2060
शनि	16 दिस॰ 2060	26 अग॰ 2063

महादशा: केतु

अंतर्दशा	से	तक
केतु	26 अग॰ 2063	22 जन॰ 2064
शुक्र	22 जन॰ 2064	23 मार्च 2065
सूर्य	23 मार्च 2065	29 जुल॰ 2065
चंद्र	29 जुल॰ 2065	27 फ़र॰ 2066
मंगल	27 फ़र॰ 2066	26 जुल॰ 2066
राहु	26 जुल॰ 2066	14 अग॰ 2067
गुरु	14 अग॰ 2067	20 जुल॰ 2068
शनि	20 जुल॰ 2068	28 अग॰ 2069
बुध	28 अग॰ 2069	26 अग॰ 2070

महादशा: शुक्र

अंतर्दशा	से	तक
शुक्र	26 अग॰ 2070	25 दिस॰ 2073
सूर्य	25 दिस॰ 2073	25 दिस॰ 2074
चंद्र	25 दिस॰ 2074	25 अग॰ 2076
मंगल	25 अग॰ 2076	25 अक्टू॰ 2077
राहु	25 अक्टू॰ 2077	25 अक्टू॰ 2080
गुरु	25 अक्टू॰ 2080	26 जून 2083
शनि	26 जून 2083	26 अग॰ 2086
बुध	26 अग॰ 2086	26 जून 2089
केतु	26 जून 2089	26 अग॰ 2090

महादशा: सूर्य

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	26 अग॰ 2090	13 दिस॰ 2090
चंद्र	13 दिस॰ 2090	14 जून 2091
मंगल	14 जून 2091	20 अक्टू॰ 2091
राहु	20 अक्टू॰ 2091	12 सित॰ 2092
गुरु	12 सित॰ 2092	2 जुल॰ 2093
शनि	2 जुल॰ 2093	14 जून 2094
बुध	14 जून 2094	20 अप्रैल 2095
केतु	20 अप्रैल 2095	26 अग॰ 2095
शुक्र	26 अग॰ 2095	25 अग॰ 2096

महादशा: चंद्र

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	25 अग॰ 2096	26 जून 2097
मंगल	26 जून 2097	25 जन॰ 2098
राहु	25 जन॰ 2098	26 जुल॰ 2099
गुरु	26 जुल॰ 2099	25 नव॰ 2100
शनि	25 नव॰ 2100	27 जून 2102
बुध	27 जून 2102	26 नव॰ 2103
केतु	26 नव॰ 2103	26 जून 2104
शुक्र	26 जून 2104	25 फ़र॰ 2106
सूर्य	25 फ़र॰ 2106	27 अग॰ 2106

महादशा: मंगल

अंतर्दशा	से	तक
मंगल	27 अग॰ 2106	23 जन॰ 2107
राहु	23 जन॰ 2107	10 फ़र॰ 2108
गुरु	10 फ़र॰ 2108	16 जन॰ 2109
शनि	16 जन॰ 2109	25 फ़र॰ 2110
बुध	25 फ़र॰ 2110	22 फ़र॰ 2111
केतु	22 फ़र॰ 2111	21 जुल॰ 2111
शुक्र	21 जुल॰ 2111	19 सित॰ 2112
सूर्य	19 सित॰ 2112	25 जन॰ 2113
चंद्र	25 जन॰ 2113	26 अग॰ 2113

प्रत्यंतर दशा: गुरु

गुरु महादशा की प्रत्यंतर दशाएँ।

गुरु – गुरु

अंतर्दशा	से	तक
गुरु	26 अग॰ 2011	8 दिस॰ 2011
शनि	8 दिस॰ 2011	9 अप्रैल 2012
बुध	9 अप्रैल 2012	29 जुल॰ 2012
केतु	29 जुल॰ 2012	12 सित॰ 2012
शुक्र	12 सित॰ 2012	20 जन॰ 2013
सूर्य	20 जन॰ 2013	28 फ़र॰ 2013
चंद्र	28 फ़र॰ 2013	4 मई 2013
मंगल	4 मई 2013	18 जून 2013
राहु	18 जून 2013	13 अक्टू॰ 2013

गुरु – शनि

अंतर्दशा	से	तक
शनि	13 अक्टू॰ 2013	9 मार्च 2014
बुध	9 मार्च 2014	18 जुल॰ 2014
केतु	18 जुल॰ 2014	10 सित॰ 2014
शुक्र	10 सित॰ 2014	11 फ़र॰ 2015
सूर्य	11 फ़र॰ 2015	29 मार्च 2015
चंद्र	29 मार्च 2015	14 जून 2015
मंगल	14 जून 2015	7 अग॰ 2015
राहु	7 अग॰ 2015	24 दिस॰ 2015
गुरु	24 दिस॰ 2015	25 अप्रैल 2016

गुरु – बुध

अंतर्दशा	से	तक
बुध	25 अप्रैल 2016	21 अग॰ 2016
केतु	21 अग॰ 2016	8 अक्टू॰ 2016
शुक्र	8 अक्टू॰ 2016	23 फ़र॰ 2017
सूर्य	23 फ़र॰ 2017	5 अप्रैल 2017
चंद्र	5 अप्रैल 2017	13 जून 2017
मंगल	13 जून 2017	1 अग॰ 2017
राहु	1 अग॰ 2017	3 दिस॰ 2017
गुरु	3 दिस॰ 2017	23 मार्च 2018
शनि	23 मार्च 2018	1 अग॰ 2018

गुरु – केतु

अंतर्दशा	से	तक
केतु	1 अग॰ 2018	21 अग॰ 2018
शुक्र	21 अग॰ 2018	17 अक्टू॰ 2018
सूर्य	17 अक्टू॰ 2018	3 नव॰ 2018
चंद्र	3 नव॰ 2018	1 दिस॰ 2018
मंगल	1 दिस॰ 2018	21 दिस॰ 2018
राहु	21 दिस॰ 2018	10 फ़र॰ 2019
गुरु	10 फ़र॰ 2019	28 मार्च 2019
शनि	28 मार्च 2019	21 मई 2019
बुध	21 मई 2019	8 जुल॰ 2019

गुरु – शुक्र

अंतर्दशा	से	तक
शुक्र	8 जुल॰ 2019	18 दिस॰ 2019
सूर्य	18 दिस॰ 2019	4 फ़र॰ 2020
चंद्र	4 फ़र॰ 2020	25 अप्रैल 2020
मंगल	25 अप्रैल 2020	21 जून 2020
राहु	21 जून 2020	14 नव॰ 2020
गुरु	14 नव॰ 2020	24 मार्च 2021
शनि	24 मार्च 2021	25 अग॰ 2021
बुध	25 अग॰ 2021	10 जन॰ 2022
केतु	10 जन॰ 2022	8 मार्च 2022

गुरु – सूर्य

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	8 मार्च 2022	23 मार्च 2022
चंद्र	23 मार्च 2022	16 अप्रैल 2022
मंगल	16 अप्रैल 2022	3 मई 2022
राहु	3 मई 2022	16 जून 2022
गुरु	16 जून 2022	25 जुल॰ 2022
शनि	25 जुल॰ 2022	9 सित॰ 2022
बुध	9 सित॰ 2022	21 अक्टू॰ 2022
केतु	21 अक्टू॰ 2022	7 नव॰ 2022
शुक्र	7 नव॰ 2022	25 दिस॰ 2022

गुरु – चंद्र

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	25 दिस॰ 2022	4 फ़र॰ 2023
मंगल	4 फ़र॰ 2023	4 मार्च 2023
राहु	4 मार्च 2023	16 मई 2023
गुरु	16 मई 2023	20 जुल॰ 2023
शनि	20 जुल॰ 2023	5 अक्टू॰ 2023
बुध	5 अक्टू॰ 2023	13 दिस॰ 2023
केतु	13 दिस॰ 2023	11 जन॰ 2024
शुक्र	11 जन॰ 2024	1 अप्रैल 2024
सूर्य	1 अप्रैल 2024	25 अप्रैल 2024

गुरु – मंगल

अंतर्दशा	से	तक
मंगल	25 अप्रैल 2024	15 मई 2024
राहु	15 मई 2024	5 जुल॰ 2024
गुरु	5 जुल॰ 2024	20 अग॰ 2024
शनि	20 अग॰ 2024	13 अक्टू॰ 2024
बुध	13 अक्टू॰ 2024	30 नव॰ 2024
केतु	30 नव॰ 2024	20 दिस॰ 2024
शुक्र	20 दिस॰ 2024	15 फ़र॰ 2025
सूर्य	15 फ़र॰ 2025	4 मार्च 2025
चंद्र	4 मार्च 2025	1 अप्रैल 2025

गुरु – राहु

अंतर्दशा	से	तक
राहु	1 अप्रैल 2025	11 अग॰ 2025
गुरु	11 अग॰ 2025	6 दिस॰ 2025
शनि	6 दिस॰ 2025	23 अप्रैल 2026
बुध	23 अप्रैल 2026	26 अग॰ 2026
केतु ✦	26 अग॰ 2026	16 अक्टू॰ 2026
शुक्र	16 अक्टू॰ 2026	11 मार्च 2027
सूर्य	11 मार्च 2027	24 अप्रैल 2027
चंद्र	24 अप्रैल 2027	6 जुल॰ 2027
मंगल	6 जुल॰ 2027	26 अग॰ 2027

प्रत्यंतर दशा: शनि

शनि महादशा की प्रत्यंतर दशाएँ।

शनि – शनि

अंतर्दशा	से	तक
शनि	26 अग॰ 2027	16 फ़र॰ 2028
बुध	16 फ़र॰ 2028	21 जुल॰ 2028
केतु	21 जुल॰ 2028	23 सित॰ 2028
शुक्र	23 सित॰ 2028	25 मार्च 2029
सूर्य	25 मार्च 2029	19 मई 2029
चंद्र	19 मई 2029	18 अग॰ 2029
मंगल	18 अग॰ 2029	21 अक्टू॰ 2029
राहु	21 अक्टू॰ 2029	4 अप्रैल 2030
गुरु	4 अप्रैल 2030	29 अग॰ 2030

शनि – बुध

अंतर्दशा	से	तक
बुध	29 अग॰ 2030	15 जन॰ 2031
केतु	15 जन॰ 2031	13 मार्च 2031
शुक्र	13 मार्च 2031	24 अग॰ 2031
सूर्य	24 अग॰ 2031	12 अक्टू॰ 2031
चंद्र	12 अक्टू॰ 2031	2 जन॰ 2032
मंगल	2 जन॰ 2032	29 फ़र॰ 2032
राहु	29 फ़र॰ 2032	25 जुल॰ 2032
गुरु	25 जुल॰ 2032	3 दिस॰ 2032
शनि	3 दिस॰ 2032	8 मई 2033

शनि – केतु

अंतर्दशा	से	तक
केतु	8 मई 2033	31 मई 2033
शुक्र	31 मई 2033	7 अग॰ 2033
सूर्य	7 अग॰ 2033	27 अग॰ 2033
चंद्र	27 अग॰ 2033	30 सित॰ 2033
मंगल	30 सित॰ 2033	23 अक्टू॰ 2033
राहु	23 अक्टू॰ 2033	23 दिस॰ 2033
गुरु	23 दिस॰ 2033	15 फ़र॰ 2034
शनि	15 फ़र॰ 2034	20 अप्रैल 2034
बुध	20 अप्रैल 2034	17 जून 2034

शनि – शुक्र

अंतर्दशा	से	तक
शुक्र	17 जून 2034	26 दिस॰ 2034
सूर्य	26 दिस॰ 2034	22 फ़र॰ 2035
चंद्र	22 फ़र॰ 2035	30 मई 2035
मंगल	30 मई 2035	5 अग॰ 2035
राहु	5 अग॰ 2035	26 जन॰ 2036
गुरु	26 जन॰ 2036	28 जून 2036
शनि	28 जून 2036	28 दिस॰ 2036
बुध	28 दिस॰ 2036	10 जून 2037
केतु	10 जून 2037	16 अग॰ 2037

शनि – सूर्य

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	16 अग॰ 2037	3 सित॰ 2037
चंद्र	3 सित॰ 2037	2 अक्टू॰ 2037
मंगल	2 अक्टू॰ 2037	22 अक्टू॰ 2037
राहु	22 अक्टू॰ 2037	13 दिस॰ 2037
गुरु	13 दिस॰ 2037	28 जन॰ 2038
शनि	28 जन॰ 2038	24 मार्च 2038
बुध	24 मार्च 2038	12 मई 2038
केतु	12 मई 2038	1 जून 2038
शुक्र	1 जून 2038	29 जुल॰ 2038

शनि – चंद्र

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	29 जुल॰ 2038	15 सित॰ 2038
मंगल	15 सित॰ 2038	19 अक्टू॰ 2038
राहु	19 अक्टू॰ 2038	14 जन॰ 2039
गुरु	14 जन॰ 2039	1 अप्रैल 2039
शनि	1 अप्रैल 2039	2 जुल॰ 2039
बुध	2 जुल॰ 2039	22 सित॰ 2039
केतु	22 सित॰ 2039	25 अक्टू॰ 2039
शुक्र	25 अक्टू॰ 2039	30 जन॰ 2040
सूर्य	30 जन॰ 2040	28 फ़र॰ 2040

शनि – मंगल

अंतर्दशा	से	तक
मंगल	28 फ़र॰ 2040	22 मार्च 2040
राहु	22 मार्च 2040	22 मई 2040
गुरु	22 मई 2040	15 जुल॰ 2040
शनि	15 जुल॰ 2040	17 सित॰ 2040
बुध	17 सित॰ 2040	13 नव॰ 2040
केतु	13 नव॰ 2040	7 दिस॰ 2040
शुक्र	7 दिस॰ 2040	12 फ़र॰ 2041
सूर्य	12 फ़र॰ 2041	5 मार्च 2041
चंद्र	5 मार्च 2041	7 अप्रैल 2041

शनि – राहु

अंतर्दशा	से	तक
राहु	7 अप्रैल 2041	11 सित॰ 2041
गुरु	11 सित॰ 2041	27 जन॰ 2042
शनि	27 जन॰ 2042	11 जुल॰ 2042
बुध	11 जुल॰ 2042	6 दिस॰ 2042
केतु	6 दिस॰ 2042	4 फ़र॰ 2043
शुक्र	4 फ़र॰ 2043	28 जुल॰ 2043
सूर्य	28 जुल॰ 2043	18 सित॰ 2043
चंद्र	18 सित॰ 2043	14 दिस॰ 2043
मंगल	14 दिस॰ 2043	12 फ़र॰ 2044

शनि – गुरु

अंतर्दशा	से	तक
गुरु	12 फ़र० 2044	15 जून 2044
शनि	15 जून 2044	8 नव० 2044
बुध	8 नव० 2044	19 मार्च 2045
केतु	19 मार्च 2045	12 मई 2045
शुक्र	12 मई 2045	13 अक्टू० 2045
सूर्य	13 अक्टू० 2045	29 नव० 2045
चंद्र	29 नव० 2045	14 फ़र० 2046
मंगल	14 फ़र० 2046	9 अप्रैल 2046
राहु	9 अप्रैल 2046	26 अग० 2046

योगिनी दशा

जन्म नक्षत्र से 1 से 8 वर्ष की आठ योगिनियाँ। हर तालिका एक योगिनी दशा और उसकी अंतर्दशाएँ देती है।

मंगला (चंद्र, 1 वर्ष): 15 अग॰ 1991 – 29 नव॰ 1991

अंतर्दशा	से	तक
सिद्धा	15 अग॰ 1991	8 सित॰ 1991
संकटा	8 सित॰ 1991	29 नव॰ 1991

पिंगला (सूर्य, 2 वर्ष): 29 नव॰ 1991 – 28 नव॰ 1993

अंतर्दशा	से	तक
पिंगला	29 नव॰ 1991	8 जन॰ 1992
धान्या	8 जन॰ 1992	9 मार्च 1992
भ्रामरी	9 मार्च 1992	29 मई 1992
भद्रिका	29 मई 1992	8 सित॰ 1992
उल्का	8 सित॰ 1992	7 जन॰ 1993
सिद्धा	7 जन॰ 1993	29 मई 1993
संकटा	29 मई 1993	8 नव॰ 1993
मंगला	8 नव॰ 1993	28 नव॰ 1993

धान्या (गुरु, 3 वर्ष): 28 नव॰ 1993 – 28 नव॰ 1996

अंतर्दशा	से	तक
धान्या	28 नव॰ 1993	27 फ़र॰ 1994
भ्रामरी	27 फ़र॰ 1994	29 जून 1994
भद्रिका	29 जून 1994	28 नव॰ 1994
उल्का	28 नव॰ 1994	30 मई 1995
सिद्धा	30 मई 1995	29 दिस॰ 1995
संकटा	29 दिस॰ 1995	28 अग॰ 1996
मंगला	28 अग॰ 1996	28 सित॰ 1996
पिंगला	28 सित॰ 1996	28 नव॰ 1996

भ्रामरी (मंगल, 4 वर्ष): 28 नव॰ 1996 – 28 नव॰ 2000

अंतर्दशा	से	तक
भ्रामरी	28 नव॰ 1996	9 मई 1997
भद्रिका	9 मई 1997	28 नव॰ 1997
उल्का	28 नव॰ 1997	30 जुल॰ 1998
सिद्धा	30 जुल॰ 1998	10 मई 1999
संकटा	10 मई 1999	29 मार्च 2000
मंगला	29 मार्च 2000	9 मई 2000
पिंगला	9 मई 2000	29 जुल॰ 2000
धान्या	29 जुल॰ 2000	28 नव॰ 2000

भद्रिका (बुध, 5 वर्ष): 28 नव॰ 2000 – 28 नव॰ 2005

अंतर्दशा	से	तक
भद्रिका	28 नव॰ 2000	8 अग॰ 2001
उल्का	8 अग॰ 2001	9 जून 2002
सिद्धा	9 जून 2002	30 मई 2003
संकटा	30 मई 2003	9 जुल॰ 2004
मंगला	9 जुल॰ 2004	28 अग॰ 2004
पिंगला	28 अग॰ 2004	8 दिस॰ 2004
धान्या	8 दिस॰ 2004	9 मई 2005
भ्रामरी	9 मई 2005	28 नव॰ 2005

उल्का (शनि, 6 वर्ष): 28 नव॰ 2005 – 29 नव॰ 2011

अंतर्दशा	से	तक
उल्का	28 नव॰ 2005	28 नव॰ 2006
सिद्धा	28 नव॰ 2006	28 जन॰ 2008
संकटा	28 जन॰ 2008	29 मई 2009
मंगला	29 मई 2009	29 जुल॰ 2009
पिंगला	29 जुल॰ 2009	28 नव॰ 2009
धान्या	28 नव॰ 2009	30 मई 2010
भ्रामरी	30 मई 2010	28 जन॰ 2011
भद्रिका	28 जन॰ 2011	29 नव॰ 2011

सिद्धा (शुक्र, 7 वर्ष): 29 नव॰ 2011 – 28 नव॰ 2018

अंतर्दशा	से	तक
सिद्धा	29 नव॰ 2011	9 अप्रैल 2013
संकटा	9 अप्रैल 2013	29 अक्टू॰ 2014
मंगला	29 अक्टू॰ 2014	8 जन॰ 2015
पिंगला	8 जन॰ 2015	30 मई 2015
धान्या	30 मई 2015	29 दिस॰ 2015
भ्रामरी	29 दिस॰ 2015	8 अक्टू॰ 2016
भद्रिका	8 अक्टू॰ 2016	28 सित॰ 2017
उल्का	28 सित॰ 2017	28 नव॰ 2018

संकटा (राहु, 8 वर्ष): 28 नव॰ 2018 – 28 नव॰ 2026

अंतर्दशा	से	तक
संकटा	28 नव॰ 2018	8 सित॰ 2020
मंगला	8 सित॰ 2020	28 नव॰ 2020
पिंगला	28 नव॰ 2020	9 मई 2021
धान्या	9 मई 2021	8 जन॰ 2022
भ्रामरी	8 जन॰ 2022	28 नव॰ 2022
भद्रिका	28 नव॰ 2022	8 जन॰ 2024
उल्का	8 जन॰ 2024	9 मई 2025
सिद्धा ✦	9 मई 2025	28 नव॰ 2026

मंगला (चंद्र, 1 वर्ष): 28 नव॰ 2026 – 29 नव॰ 2027

अंतर्दशा	से	तक
मंगला	28 नव॰ 2026	8 दिस॰ 2026
पिंगला	8 दिस॰ 2026	29 दिस॰ 2026
धान्या	29 दिस॰ 2026	28 जन॰ 2027
भ्रामरी	28 जन॰ 2027	10 मार्च 2027
भद्रिका	10 मार्च 2027	29 अप्रैल 2027
उल्का	29 अप्रैल 2027	29 जून 2027
सिद्धा	29 जून 2027	8 सित॰ 2027
संकटा	8 सित॰ 2027	29 नव॰ 2027

पिंगला (सूर्य, 2 वर्ष): 29 नव॰ 2027 – 28 नव॰ 2029

अंतर्दशा	से	तक
पिंगला	29 नव॰ 2027	8 जन॰ 2028
धान्या	8 जन॰ 2028	9 मार्च 2028
भ्रामरी	9 मार्च 2028	29 मई 2028
भद्रिका	29 मई 2028	8 सित॰ 2028
उल्का	8 सित॰ 2028	7 जन॰ 2029
सिद्धा	7 जन॰ 2029	29 मई 2029
संकटा	29 मई 2029	8 नव॰ 2029
मंगला	8 नव॰ 2029	28 नव॰ 2029

धान्या (गुरु, 3 वर्ष): 28 नव॰ 2029 – 28 नव॰ 2032

अंतर्दशा	से	तक
धान्या	28 नव॰ 2029	27 फ़र॰ 2030
भ्रामरी	27 फ़र॰ 2030	29 जून 2030
भद्रिका	29 जून 2030	28 नव॰ 2030
उल्का	28 नव॰ 2030	30 मई 2031
सिद्धा	30 मई 2031	29 दिस॰ 2031
संकटा	29 दिस॰ 2031	28 अग॰ 2032
मंगला	28 अग॰ 2032	28 सित॰ 2032
पिंगला	28 सित॰ 2032	28 नव॰ 2032

भ्रामरी (मंगल, 4 वर्ष): 28 नव॰ 2032 – 28 नव॰ 2036

अंतर्दशा	से	तक
भ्रामरी	28 नव॰ 2032	9 मई 2033
भद्रिका	9 मई 2033	28 नव॰ 2033
उल्का	28 नव॰ 2033	30 जुल॰ 2034
सिद्धा	30 जुल॰ 2034	10 मई 2035
संकटा	10 मई 2035	29 मार्च 2036
मंगला	29 मार्च 2036	9 मई 2036
पिंगला	9 मई 2036	29 जुल॰ 2036
धान्या	29 जुल॰ 2036	28 नव॰ 2036

भद्रिका (बुध, 5 वर्ष): 28 नव॰ 2036 – 28 नव॰ 2041

अंतर्दशा	से	तक
भद्रिका	28 नव॰ 2036	8 अग॰ 2037
उल्का	8 अग॰ 2037	9 जून 2038
सिद्धा	9 जून 2038	30 मई 2039
संकटा	30 मई 2039	9 जुल॰ 2040
मंगला	9 जुल॰ 2040	28 अग॰ 2040
पिंगला	28 अग॰ 2040	8 दिस॰ 2040
धान्या	8 दिस॰ 2040	9 मई 2041
भ्रामरी	9 मई 2041	28 नव॰ 2041

उल्का (शनि, 6 वर्ष): 28 नव॰ 2041 – 29 नव॰ 2047

अंतर्दशा	से	तक
उल्का	28 नव॰ 2041	28 नव॰ 2042
सिद्धा	28 नव॰ 2042	28 जन॰ 2044
संकटा	28 जन॰ 2044	29 मई 2045
मंगला	29 मई 2045	29 जुल॰ 2045
पिंगला	29 जुल॰ 2045	28 नव॰ 2045
धान्या	28 नव॰ 2045	30 मई 2046
भ्रामरी	30 मई 2046	28 जन॰ 2047
भद्रिका	28 जन॰ 2047	29 नव॰ 2047

सिद्धा (शुक्र, 7 वर्ष): 29 नव॰ 2047 – 28 नव॰ 2054

अंतर्दशा	से	तक
सिद्धा	29 नव॰ 2047	9 अप्रैल 2049
संकटा	9 अप्रैल 2049	29 अक्टू॰ 2050
मंगला	29 अक्टू॰ 2050	8 जन॰ 2051
पिंगला	8 जन॰ 2051	30 मई 2051
धान्या	30 मई 2051	29 दिस॰ 2051
भ्रामरी	29 दिस॰ 2051	8 अक्टू॰ 2052
भद्रिका	8 अक्टू॰ 2052	28 सित॰ 2053
उल्का	28 सित॰ 2053	28 नव॰ 2054

संकटा (राहु, 8 वर्ष): 28 नव॰ 2054 – 28 नव॰ 2062

अंतर्दशा	से	तक
संकटा	28 नव॰ 2054	8 सित॰ 2056
मंगला	8 सित॰ 2056	28 नव॰ 2056
पिंगला	28 नव॰ 2056	9 मई 2057
धान्या	9 मई 2057	8 जन॰ 2058
भ्रामरी	8 जन॰ 2058	28 नव॰ 2058
भद्रिका	28 नव॰ 2058	8 जन॰ 2060
उल्का	8 जन॰ 2060	9 मई 2061
सिद्धा	9 मई 2061	28 नव॰ 2062

मंगला (चंद्र, 1 वर्ष): 28 नव॰ 2062 – 29 नव॰ 2063

अंतर्दशा	से	तक
मंगला	28 नव॰ 2062	8 दिस॰ 2062
पिंगला	8 दिस॰ 2062	29 दिस॰ 2062
धान्या	29 दिस॰ 2062	28 जन॰ 2063
भ्रामरी	28 जन॰ 2063	10 मार्च 2063
भद्रिका	10 मार्च 2063	29 अप्रैल 2063
उल्का	29 अप्रैल 2063	29 जून 2063
सिद्धा	29 जून 2063	8 सित॰ 2063
संकटा	8 सित॰ 2063	29 नव॰ 2063

पिंगला (सूर्य, 2 वर्ष): 29 नव॰ 2063 – 28 नव॰ 2065

अंतर्दशा	से	तक
पिंगला	29 नव॰ 2063	8 जन॰ 2064
धान्या	8 जन॰ 2064	9 मार्च 2064
भ्रामरी	9 मार्च 2064	29 मई 2064
भद्रिका	29 मई 2064	8 सित॰ 2064
उल्का	8 सित॰ 2064	7 जन॰ 2065
सिद्धा	7 जन॰ 2065	29 मई 2065
संकटा	29 मई 2065	8 नव॰ 2065
मंगला	8 नव॰ 2065	28 नव॰ 2065

धान्या (गुरु, 3 वर्ष): 28 नव॰ 2065 – 28 नव॰ 2068

अंतर्दशा	से	तक
धान्या	28 नव॰ 2065	27 फ़र॰ 2066
भ्रामरी	27 फ़र॰ 2066	29 जून 2066
भद्रिका	29 जून 2066	28 नव॰ 2066
उल्का	28 नव॰ 2066	30 मई 2067
सिद्धा	30 मई 2067	29 दिस॰ 2067
संकटा	29 दिस॰ 2067	28 अग॰ 2068
मंगला	28 अग॰ 2068	28 सित॰ 2068
पिंगला	28 सित॰ 2068	28 नव॰ 2068

भ्रामरी (मंगल, 4 वर्ष): 28 नव॰ 2068 – 28 नव॰ 2072

अंतर्दशा	से	तक
भ्रामरी	28 नव॰ 2068	9 मई 2069
भद्रिका	9 मई 2069	28 नव॰ 2069
उल्का	28 नव॰ 2069	30 जुल॰ 2070
सिद्धा	30 जुल॰ 2070	10 मई 2071
संकटा	10 मई 2071	29 मार्च 2072
मंगला	29 मार्च 2072	9 मई 2072
पिंगला	9 मई 2072	29 जुल॰ 2072
धान्या	29 जुल॰ 2072	28 नव॰ 2072

भद्रिका (बुध, 5 वर्ष): 28 नव॰ 2072 – 28 नव॰ 2077

अंतर्दशा	से	तक
भद्रिका	28 नव॰ 2072	8 अग॰ 2073
उल्का	8 अग॰ 2073	9 जून 2074
सिद्धा	9 जून 2074	30 मई 2075
संकटा	30 मई 2075	9 जुल॰ 2076
मंगला	9 जुल॰ 2076	28 अग॰ 2076
पिंगला	28 अग॰ 2076	8 दिस॰ 2076
धान्या	8 दिस॰ 2076	9 मई 2077
भ्रामरी	9 मई 2077	28 नव॰ 2077

उल्का (शनि, 6 वर्ष): 28 नव॰ 2077 – 29 नव॰ 2083

अंतर्दशा	से	तक
उल्का	28 नव॰ 2077	28 नव॰ 2078
सिद्धा	28 नव॰ 2078	28 जन॰ 2080
संकटा	28 जन॰ 2080	29 मई 2081
मंगला	29 मई 2081	29 जुल॰ 2081
पिंगला	29 जुल॰ 2081	28 नव॰ 2081
धान्या	28 नव॰ 2081	30 मई 2082
भ्रामरी	30 मई 2082	28 जन॰ 2083
भद्रिका	28 जन॰ 2083	29 नव॰ 2083

सिद्धा (शुक्र, 7 वर्ष): 29 नव॰ 2083 – 28 नव॰ 2090

अंतर्दशा	से	तक
सिद्धा	29 नव॰ 2083	9 अप्रैल 2085
संकटा	9 अप्रैल 2085	29 अक्टू॰ 2086
मंगला	29 अक्टू॰ 2086	8 जन॰ 2087
पिंगला	8 जन॰ 2087	30 मई 2087
धान्या	30 मई 2087	29 दिस॰ 2087
भ्रामरी	29 दिस॰ 2087	8 अक्टू॰ 2088
भद्रिका	8 अक्टू॰ 2088	28 सित॰ 2089
उल्का	28 सित॰ 2089	28 नव॰ 2090

संकटा (राहु, 8 वर्ष): 28 नव॰ 2090 – 28 नव॰ 2098

अंतर्दशा	से	तक
संकटा	28 नव॰ 2090	8 सित॰ 2092
मंगला	8 सित॰ 2092	28 नव॰ 2092
पिंगला	28 नव॰ 2092	9 मई 2093
धान्या	9 मई 2093	8 जन॰ 2094
भ्रामरी	8 जन॰ 2094	28 नव॰ 2094
भद्रिका	28 नव॰ 2094	8 जन॰ 2096
उल्का	8 जन॰ 2096	9 मई 2097
सिद्धा	9 मई 2097	28 नव॰ 2098

मंगला (चंद्र, 1 वर्ष): 28 नव॰ 2098 – 29 नव॰ 2099

अंतर्दशा	से	तक
मंगला	28 नव॰ 2098	8 दिस॰ 2098
पिंगला	8 दिस॰ 2098	29 दिस॰ 2098
धान्या	29 दिस॰ 2098	28 जन॰ 2099
भ्रामरी	28 जन॰ 2099	10 मार्च 2099
भद्रिका	10 मार्च 2099	29 अप्रैल 2099
उल्का	29 अप्रैल 2099	29 जून 2099
सिद्धा	29 जून 2099	8 सित॰ 2099
संकटा	8 सित॰ 2099	29 नव॰ 2099

पिंगला (सूर्य, 2 वर्ष): 29 नव॰ 2099 – 29 नव॰ 2101

अंतर्दशा	से	तक
पिंगला	29 नव॰ 2099	8 जन॰ 2100
धान्या	8 जन॰ 2100	10 मार्च 2100
भ्रामरी	10 मार्च 2100	30 मई 2100
भद्रिका	30 मई 2100	9 सित॰ 2100
उल्का	9 सित॰ 2100	8 जन॰ 2101
सिद्धा	8 जन॰ 2101	30 मई 2101
संकटा	30 मई 2101	9 नव॰ 2101
मंगला	9 नव॰ 2101	29 नव॰ 2101

KP (कृष्णमूर्ति) भाव संधि और कारक

प्लेसिडस भाव संधियाँ, नक्षत्र और उप स्वामी तथा कारक केपी (कृष्णमूर्ति) अयनांश से हैं। ग्रह संधि से संधि तक रखे गए हैं।

केपी (कृष्णमूर्ति) अयनांश: 23°40′05″

भाव संधि

भाव संधि	भोगांश	राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उप स्वामी
1	126°23′18″	सिंह	6°23′18″	सूर्य	केतु	राहु
2	152°45′34″	कन्या	2°45′34″	बुध	सूर्य	गुरु
3	182°44′31″	तुला	2°44′31″	शुक्र	मंगल	शुक्र
4	214°48′48″	वृश्चिक	4°48′48″	मंगल	शनि	शनि
5	246°46′17″	धनु	6°46′17″	गुरु	केतु	राहु
6	277°24′53″	मकर	7°24′53″	शनि	सूर्य	केतु
7	306°23′18″	कुंभ	6°23′18″	शनि	मंगल	चंद्र
8	332°45′34″	मीन	2°45′34″	गुरु	गुरु	राहु
9	2°44′31″	मेष	2°44′31″	मंगल	केतु	शुक्र
10	34°48′48″	वृषभ	4°48′48″	शुक्र	सूर्य	शनि
11	66°46′17″	मिथुन	6°46′17″	बुध	राहु	राहु
12	97°24′53″	कर्क	7°24′53″	चंद्र	शनि	केतु

भाव कारक

भाव	A: स्थित ग्रहों के नक्षत्र में	B: स्थित ग्रह	C: स्वामी के नक्षत्र में	D: स्वामी
1	सूर्य, चंद्र, मंगल, राहु	मंगल, बुध, शुक्र	शनि	सूर्य
2	—	—	सूर्य	बुध
3	—	चंद्र	मंगल, राहु	शुक्र
4	—	—	चंद्र	मंगल
5	—	राहु	केतु	गुरु
6	—	शनि	—	शनि
7	—	—	—	शनि
8	—	—	केतु	गुरु
9	—	—	चंद्र	मंगल
10	—	—	मंगल, राहु	शुक्र
11	बुध, गुरु, शुक्र	केतु	सूर्य	बुध
12	शनि, केतु	सूर्य, गुरु	—	चंद्र

ग्रह कारक

ग्रह	नक्षत्र स्वामी	A: नक्षत्र स्वामी के भाव	B: स्थित भाव	C: नक्षत्र स्वामी के स्वामित्व वाले	D: स्वामित्व वाले भाव
सूर्य	बुध	1	12	2, 11	1
चंद्र	मंगल	1	3	4, 9	12
मंगल	शुक्र	1	1	3, 10	4, 9
बुध	केतु	11	1	—	2, 11
गुरु	केतु	11	12	—	5, 8
शुक्र	केतु	11	1	—	3, 10
शनि	सूर्य	12	6	1	6, 7
राहु	शुक्र	1	5	3, 10	—
केतु	गुरु	12	11	5, 8	—

गोचर तालिकाएँ (अगले दस वर्ष)

लग्न · चंद्र से भाव

शनि

राशि	लग्न · चंद्र से भाव	से	तक
मीन	8 · 6	30 सित॰ 2026	3 जून 2027
मेष	9 · 7	3 जून 2027	20 अक्टू॰ 2027
मीन	8 · 6	20 अक्टू॰ 2027	23 फ़र॰ 2028
मेष	9 · 7	23 फ़र॰ 2028	8 अग॰ 2029
वृषभ	10 · 8	8 अग॰ 2029	5 अक्टू॰ 2029
मेष	9 · 7	5 अक्टू॰ 2029	17 अप्रैल 2030
वृषभ	10 · 8	17 अप्रैल 2030	30 मई 2032
मिथुन	11 · 9	30 मई 2032	12 जुल॰ 2034
कर्क	12 · 10	12 जुल॰ 2034	27 अग॰ 2036
सिंह	1 · 11	27 अग॰ 2036	29 सित॰ 2036

गुरु

राशि	लग्न · चंद्र से भाव	से	तक
कर्क	12 · 10	30 सित॰ 2026	31 अक्टू॰ 2026
सिंह	1 · 11	31 अक्टू॰ 2026	24 जन॰ 2027
कर्क	12 · 10	24 जन॰ 2027	25 जून 2027
सिंह	1 · 11	25 जून 2027	26 नव॰ 2027
कन्या	2 · 12	26 नव॰ 2027	28 फ़र॰ 2028
सिंह	1 · 11	28 फ़र॰ 2028	24 जुल॰ 2028
कन्या	2 · 12	24 जुल॰ 2028	26 दिस॰ 2028
तुला	3 · 1	26 दिस॰ 2028	29 मार्च 2029
कन्या	2 · 12	29 मार्च 2029	24 अग॰ 2029
तुला	3 · 1	24 अग॰ 2029	24 जन॰ 2030
वृश्चिक	4 · 2	24 जन॰ 2030	1 मई 2030
तुला	3 · 1	1 मई 2030	22 सित॰ 2030
वृश्चिक	4 · 2	22 सित॰ 2030	17 फ़र॰ 2031
धनु	5 · 3	17 फ़र॰ 2031	13 जून 2031
वृश्चिक	4 · 2	13 जून 2031	15 अक्टू॰ 2031
धनु	5 · 3	15 अक्टू॰ 2031	5 मार्च 2032
मकर	6 · 4	5 मार्च 2032	12 अग॰ 2032
धनु	5 · 3	12 अग॰ 2032	23 अक्टू॰ 2032
मकर	6 · 4	23 अक्टू॰ 2032	17 मार्च 2033
कुंभ	7 · 5	17 मार्च 2033	28 मार्च 2034
मीन	8 · 6	28 मार्च 2034	6 अप्रैल 2035
मेष	9 · 7	6 अप्रैल 2035	14 अप्रैल 2036
वृषभ	10 · 8	14 अप्रैल 2036	9 सित॰ 2036
मिथुन	11 · 9	9 सित॰ 2036	29 सित॰ 2036

राहु · केतु

राशि	लग्न · चंद्र से भाव	से	तक
कुंभ · सिंह	7 · 5 / 1 · 11	30 सित॰ 2026	5 दिस॰ 2026
मकर · कर्क	6 · 4 / 12 · 10	5 दिस॰ 2026	23 जून 2028
धनु · मिथुन	5 · 3 / 11 · 9	23 जून 2028	10 जन॰ 2030
वृश्चिक · वृषभ	4 · 2 / 10 · 8	10 जन॰ 2030	31 जुल॰ 2031
तुला · मेष	3 · 1 / 9 · 7	31 जुल॰ 2031	16 फ़र॰ 2033
कन्या · मीन	2 · 12 / 8 · 6	16 फ़र॰ 2033	5 सित॰ 2034
सिंह · कुंभ	1 · 11 / 7 · 5	5 सित॰ 2034	24 मार्च 2036
कर्क · मकर	12 · 10 / 6 · 4	24 मार्च 2036	29 सित॰ 2036

साढ़े साती और ढैया

अवधि	चरण	से	तक
ढैया (कंटक शनि, चंद्र से चौथा)	ढैया (कंटक शनि, चंद्र से चौथा)	24 जन॰ 2020	29 अप्रैल 2022
ढैया (कंटक शनि, चंद्र से चौथा)	ढैया (कंटक शनि, चंद्र से चौथा)	12 जुल॰ 2022	17 जन॰ 2023
ढैया (अष्टम शनि, चंद्र से आठवाँ)	ढैया (अष्टम शनि, चंद्र से आठवाँ)	8 अग॰ 2029	5 अक्टू॰ 2029
ढैया (अष्टम शनि, चंद्र से आठवाँ)	ढैया (अष्टम शनि, चंद्र से आठवाँ)	17 अप्रैल 2030	30 मई 2032
साढ़े साती	आरंभ (चंद्र से 12वाँ)	22 अक्टू॰ 2038	5 अप्रैल 2039
साढ़े साती	आरंभ (चंद्र से 12वाँ)	12 जुल॰ 2039	27 जन॰ 2041
साढ़े साती	शिखर (चंद्र पर)	27 जन॰ 2041	6 फ़र॰ 2041
साढ़े साती	आरंभ (चंद्र से 12वाँ)	6 फ़र॰ 2041	26 सित॰ 2041
साढ़े साती	शिखर (चंद्र पर)	26 सित॰ 2041	11 दिस॰ 2043
साढ़े साती	अंत (चंद्र से दूसरा)	11 दिस॰ 2043	23 जून 2044
साढ़े साती	शिखर (चंद्र पर)	23 जून 2044	30 अग॰ 2044
साढ़े साती	अंत (चंद्र से दूसरा)	30 अग॰ 2044	7 दिस॰ 2046
ढैया (कंटक शनि, चंद्र से चौथा)	ढैया (कंटक शनि, चंद्र से चौथा)	6 मार्च 2049	9 जुल॰ 2049
ढैया (कंटक शनि, चंद्र से चौथा)	ढैया (कंटक शनि, चंद्र से चौथा)	4 दिस॰ 2049	24 फ़र॰ 2052

उन्नत iAstroGuru इंजन से गणना, भरोसेमंद संदर्भों से सटीकता के लिए परखी गई।
इन गणनाओं से स्वचालित व्याख्या, हर रिपोर्ट हमारी बहु-स्तरीय गुणवत्ता जाँच से परखी गई।

Shiv Shakti Software Solutions (iAstroGuru)
Digitally signed on 10 Oct 2026, 09:21 IST
Document ID IAG-FDWC-VJWY-4BCG